**HIN – 527 हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन-यात्रा**

**श्रेयांकः 20**

**स्नातकोत्तर कला प्रथम वर्ष (हिंदी)**

**नाम- ज्योति सेनापति**

**अनुक्रमांकः 09**

**PR Number: 202005196**

**शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय**

**हिंदी अध्ययन शाखा**

**गोवा विश्वविद्यालय**

**अप्रैल 2024**

16/20

**परीक्षकः दीपक वरक**

03/05/24

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

| क्रमांक अंक | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | प्रस्तावना | 3 |
| 2. | DAY-1 : अक्षरधाम<br>राष्ट्रपति भवन | 4 |
| 3. | DAY-2 : इंडिया गेट<br>ललित साहित्य एकेडमी<br>लोटस मंदिर<br>हुमायुन टोम्ब<br>लक्ष्मी नारायण मंदिर | 11 |
| 4. | DAY-3 : हिंदू कॉलेज<br>दिल्ली यूनिवर्सिटी<br>जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी<br>कुतुब मीनार | 19 |
| 5. | DAY-4 : ताज महल<br>मथुरा<br>वृन्दावन | 25 |
| 6. | DAY-5 : उग्रसेन की बावली<br>राजघाट<br>गाँधी म्यूजियम<br>बाल भवन<br>लाल किला<br>सरोजिनी नगर मार्केट | 29 |
| 7. | निष्कर्ष | 36 |

# प्रस्तावना

दिल्ली भारत की राष्ट्रीय राजधानी है। यह देश के समृद्ध अतीत और संपन्न वर्तमान का प्रतीक है। यह प्राचीन मिश्रण वाला एक महानगरीय शहर है। इतिहास शहर की हवा में है.

शहर का अस्तित्व महाकाव्य महाभारत जितना पुराना है, जहां शहर को इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था। सदियों के दौरान, इंद्रप्रस्थ के निकट आठ और शहर अस्तित्व में आए: लाल कोट, सिरी, दीनपनाह, किला राय पिथौरा, फिरोजाबाद, जहांपनाह, तुगलकाबाद और शाहजहानाबाद। दिल्ली कुछ प्रमुख राजवंशों, तुगलक, खिलजी और मुगलों की राजधानी रही है। दिल्ली अतीत में समाटों द्वारा बनाए गए वास्तुशिल्प चमत्कारों का घर है।

दिल्ली अतुल्य भारत का परिचय है। इसलिए, हम आपका स्वागत करते हैं कि आप आएं और उस शहर का अनुभव करें जहां आधुनिकता प्राचीन से मिलती है।

## DAY 1

हम सब यह साल 2024 में बहुत ज्यादा उत्साह में थे क्योंकि हम इस साल कॉलेज की तरफ से स्टडी टूर जाने वाले थे।

सभी बच्चे बेसब्री से इंतजार कर रहे थे कि कब हमारे शिक्षक तैयार होंगे और कब हम जल्दी से जल्दी जाएंगे।2 दिन बाद हमारे शिक्षक हमे पूछे कि कितने लोग भ्रमण के लिए आने तैयार है, पहले तो सभी ने उत्साह से हाथ उपर किया।कुछ देर बाद हमारे शिक्षक बोले की ये मजाक तथा मनोरंजन का विषय नहीं है, ये जिम्मेदारी भरी बात है कृपया जल्दी ना करे अपने माता पिता को पूछिए और फिर हमें बताइए हम आपको 2 दिन का समय देते हैं।

2 दिन बाद हम सबने अपनी अपनी नाम दी, कुल 32 लोग तैयार हुए टूर में जाने के लिए। हमारे शिक्षक ने हमें एक फॉर्म दिया भरने और बोला कि अपने परिवार से दस्तखत लाओ कि वे तैयार है तुम्हें भेजने या नहीं। सात से 10 बच्चों ने अगले ही दिन अपना नाम कैंसिल कर दिया क्योंकि उनके परिवार सहमत नहीं थे इनको भेजने।

अब कुल मिलाकर 26 बच्चे तैयार हुए टूर जाने के लिए। अब हमें जगह चुन्नी थी कि कहाँ जाएं, कोई कश्मीर बोला, कोई शिमला, कोई बनारस, कोई पटना, कोई बंगाल, कोई तमिल नाडु आदि जगहों का नाम लेने लगे। आखिर हमारे शिक्षक ने बोला कि दिल्ली जगा चलते हैं वहाँ इस समय पर बुक फेस्टिवल होगा और उस फेस्टिवल की कुछ जानकारी भी दी। उन्होंने कहा कि पिछले 51 वर्षों से आयोजित किया जा रहा नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला (एनडीडब्ल्यूबीएफ) प्रकाशन जगत का एक प्रमुख कैलेंडर कार्यक्रम है।

मेले का आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन) द्वारा किया जाता है। आईटीपीओ (उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय के तहत) मेले का सह-आयोजक/स्थल भागीदार है। बच्चों के साहित्य और पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने वाली कई गतिविधियाँ जैसे कहानी कहने के सत्र, कार्यशालाएँ, पैनल चर्चा, इंटरैक्टिव सत्र, प्रश्नोत्तरी, प्रतियोगिताएं, आदि के साथ-साथ बाल लेखक का कोना एक आकर्षक ढंग से डिजाइन किए

गए बच्चों के मंडप में आयोजित किया जाता है। यह सब सुनकर हम सभी बच्चे तैयार हो गए दिल्ली चलने के लिए।

अब जरूरी था कि जब जगह तय हो ही गया है तो टिकट निकालना पड़ेगा नहीं तो टिकट जल्दी कन्फर्म नहीं मिलती है। इसलिए हम पांच बच्चे और दो शिक्षक के साथ पेंजिम में टिकट निकालने गए हमें वहाँ पहुंचने में थोड़ी देर हो गई। हम करीबन 3:15 ऐसे पहुंचें कुल मिलाकर 26 और दो सर हमें 28 के आसपास टिकट्स चाहिए थी। वहाँ गर्दी भी बहुत था इतने सारे टिकट्स निकलना आसान काम नहीं था। फिर भी हम सबने मिलकर जल्दी जल्दी सारे फॉर्म भरें और टिकट्स निकालने की कतार में खड़े हो गए। हम गोवा एक्सप्रेस से जाने वाले थे मडगांव से निज़ामुद्दीन 14 फरवरी दोपहर 3:30 बजे ट्रेन था।

सभी बच्चे बहुत ज्यादा प्रसन्न थे, हम सब बस दिन गिन रहे थे कि कब 14 फरवरी आएगा मन कर रहा था अभी चले जाए। देखते ही देखते 14 फरवरी नजदीक ही था बस 3 दिन बचे थे, तभी व्हाट्सएप पे हमारे शर्ट का मैसेज आया कि टूर में जाना संभव शायद ही ना हो और अगर जाएंगे तो भी हमें जाने का तरीका बदलना पड़ेगा। यह मैसेज पढ़कर हम गुम से बैठ गए हमारी इच्छा  एकदम से चूर चूर हो गई। सोचा नहीं था कि कुछ ऐसा होगा पर हालात को समझते हुए हम तैयार हुए कि कोई दूसरी तारीख देखते हैं जाने के लिए। सबकी सहमति से हम 18 मार्च से लेकर 26 मार्च तक जाने का तय किये इसी हिसाब से टिकट भी निकालें।

इस बार बच्चों में ज्यादा प्रसन्नता नहीं दिखाई दी सब परीक्षा के कारण व्यस्त हो गए हमें बहुत सारे आई.एस.ए देनी थी। देखते देखते दिन नजदीक आया हमारे साथ हमारे एक अध्यापक नहीं आ सके उनके कुछ पारिवारिक समस्या के कारण, पर उनके जगह पे हमारे साथ आने के

लिए एक शिक्षिका को चुना गया। टूर का एक सेपरेट व्हाट्सएप ग्रुप बनाया गया था उसमें हमें बताया गया कि क्या क्या लाना है किन चीजों की आवश्यकता थी यह सूची में बताया गया। सबको बताया गया कि मड़गांव आना है ठीक दोपहर 2:30 प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर आके उपस्थित रहना है।

हम सब समय से पहले ही वहाँ पर उपस्थित थे, ट्रेन उस दिन करीब दो घंटा लेट था, ट्रेन 5:00 बजे प्लेटफार्म में आया हम सभी के परिवार वाले हमें छोड़ने आए थे।

ट्रेन का सफर यादगार था हँसी मजाक के साथ साथ हमें सतर्कता भी बरतनी पड़ी। ट्रेन में रात के समय एक आदमी घुस आया था, हमारे एक साथी के साथ बहस करने लगा था बैग इधर से उधर पटकने लगा था हम सब उसे पूछे कि तुम्हारा टिकट दिखाओ तब वह थोड़ा चुप बैठ गया और फिर हम टीसी भुलाने का धमकी दिये तब जाकर वह एक ही मिनट में रफूचक्कर हो गया शायद से उसने शराब पी रखी थी यह आदमी को देखकर सबको एक डर सा लगने लगा था उस रात नींद नहीं हुई सब जागने लगी और अपने अपने लगेज पर नजर दिए बैठे।

हमें दिल्ली पहुंचते पहुंचते करीब सुबह के 5:00 बज गए थे। दिल्ली में ठंडी अभी तक बरकरार थी हम सब अपने अपने सामान सम्भालते हुए मेट्रो तक की रस्ता पकड़ी।

गोवा में मेट्रो नहीं है पहली बार दिल्ली का मेट्रो देखा सब अचंभित तथा खुश थे कुछ नया अनुभव करने को मिल रहा है सोचकर सभी उत्साह से नाच उठे।हमें मेट्रो के लिए ₹40 का टिकट निकाला पड़ा 1 घंटे तक वह टिकट रहता है उसे 1 घंटे में हम तीन बार चेकइन कर सकते हैं।

हम मेट्रो से दिल्ली से नई दिल्ली तक गए मेट्रो इतना तेज था कि हमें बस 810 मिनट में ही उसने नई दिल्ली पहुंचा दी मेट्रो के अंदर का माहौल बहुत ही शांत तथा सुंदर था।

हम 9:00 बजे नई दिल्ली पहुंचे। हमने जो रहने का स्थान चुना था वह अचानक से फ़ोन नहीं उठाया कारण वर्ष हमें दूसरी जगह देखनी पड़ी करीब 1 घंटे के बाद में हमारे शिक्षक नए जगह खोजें जहाँ हम रह सकते हैं और जहाँ का माहौल सुरक्षित हो। मेट्रो के बाहर बहुत से तीन पहिये वाले सी.एन.जी. गाड़ी तैयार खड़ी थी, उन गाड़ियों से हम होटल तक पहुंचे। हम होटल 15 मिनट में ही पहुँच गए दिल्ली की रस्ता गोवा के हाउसिंग बोर्ड रास्ते से कुछ कम नहीं था वही गली और गलियों में 1000 दुकानें, गन्दगी भी वहाँ पर बहुत मात्रा में दिखाई दे रही थी, रस्ते में आते जाते लोग गाड़ियों पर ध्यान ही नहीं दिया करते थे। शोर शराबा और प्रदूषण से भरा यह शहर कुछ नया था हमारे लिए। होटल का नाम था इंटरनेशनल डीलक्स होटल बस काफी अच्छा होटल था। एक कमरे में हम चार से तीन बच्चे रुके होटल में जाकर पहले हम नहाए धोए और फिर हम सब मिलकर एक साथ कुछ खाने गए।

खाने के बाद हमारे शिक्षकों ने तय किया कि सब अक्षरधाम चलेंगे। ट्रेन के सफर में इतना थकान होने के बावजूद हम सब बिना हिचकी चाय तैयार हो गए अक्षरधाम चलने।

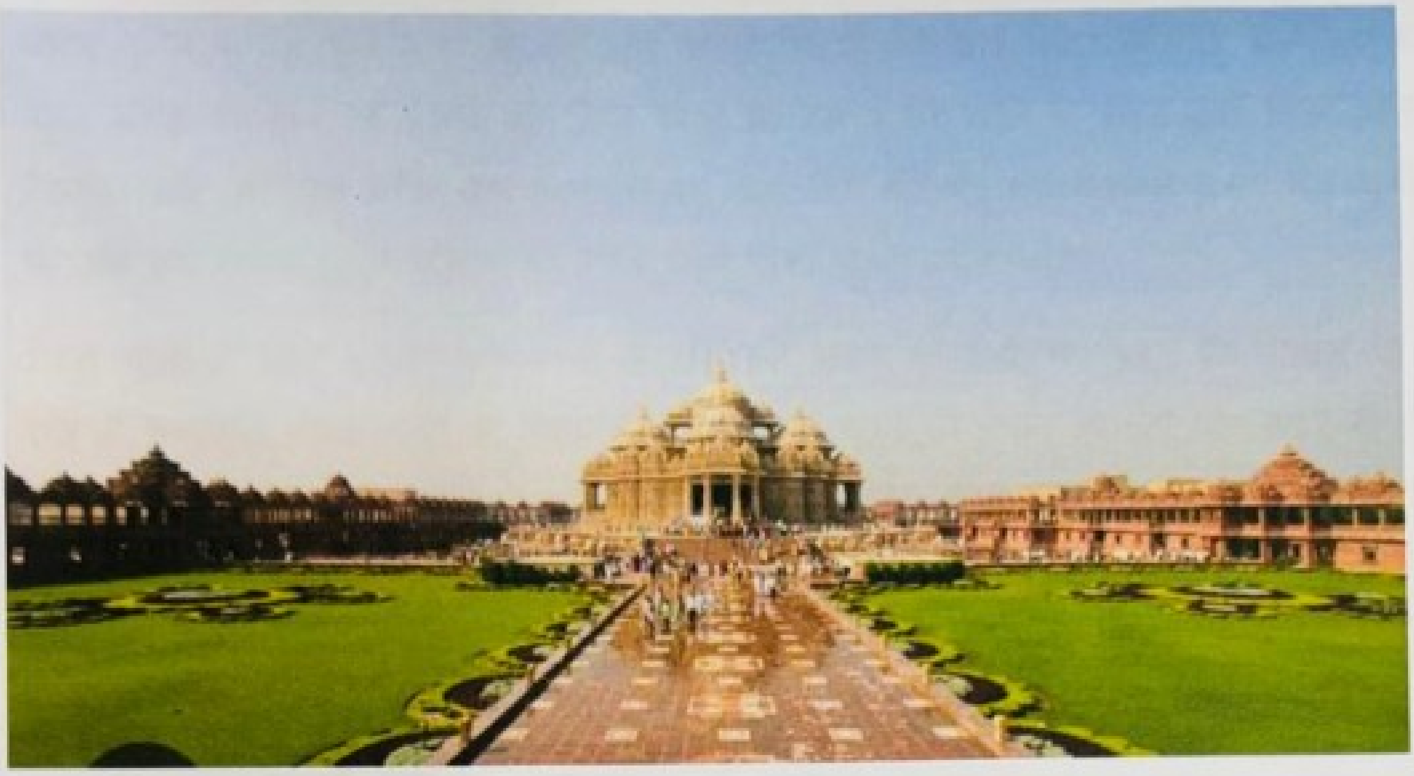

अक्षरधाम मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया। मंदिर को बनाने में लगभग पांच साल का समय लगा था। श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी महाराज के नेतृत्व में इस मंदिर को बनाया गया था। करीब 100 एकड़ भूमि में फैले इस मंदिर को 11 हजार से ज्यादा कारीगरों की मदद से बनाया गया। पूरे मंदिर को पांच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। मंदिर में उच्च संरचना में 234 नक्काशीदार खंभे, 9 अलंकृत गुंबदों, 20 शिखर होने के साथ 20,000 मूर्तियां भी शामिल हैं। मंदिर में ऋषियों और संतों की प्रतिमाओं को भी स्थापित किया गया है।

मंदिर घूमने के बाद हम मंदिर के कई और जगहों पर भी गए वहाँ मंदिर के पीछे खाने लायक बहुत जगह थी वहा पर प्रसाद भी दिया करते हैं, हम सबने खाने के लिए कुछ लिया और बैठकर खाते खाते उस मंदिर की खूबसूरती पर नजर दिए बैठे थे। रात करीबन 8:00 बज चुकी थी अब हमें वापस होटल लौटना था सभी बच्चे खुशी खुशी होटल लौटे।

अक्षर धाम से आते - आते हम रास्ते में राष्ट्रपति भवन भी देखें, वह बहुत ही विशाल था। रात में राष्ट्रपति भवन लाइट के वजह से और ज्यादा खूबसूरत नजर आ रहा था। बाहर से ही देखिये पता लग रहा था कि कितना सिक्योरिटी होगा अंदर। ऐसा लगा कि शायद मड़गांव का पूरा शहर ही होगा एक राष्ट्रपति भवन। कई बच्चों के मन में सवाल था की द्रौपदी मुर्मू तो एक ही है उनके लिए इतनी बड़ी जगह किस लिए और वो इतने बड़े जगह पे अकेले रहती कैसी होंगी।

हम अंदर तो नहीं जा पाए लेकिन बाहर का दृश्य ही एकदम लुभाने लायक था हमने बाहर से ही कुछ तस्वीरें लिए और उस भवन को देखने का आनंद उठा। बस भी वहीं से दो तीन चक्कर लगाया ताकि हम उसे और अच्छे से देख सकें।

अक्षरधाम और राष्ट्रपति भवन देखने के बाद हम सभी थके हुए होटल पहुंचे। हमारे शिक्षक ने कहा कि जिनको सोना है आराम करना है वो कर ले और जिनको खाना है वो हमारे साथ होटल में चलिए। सभी बच्चे बहुत ज्यादा थक गए थे क्योंकि ट्रेन के सफर के बाद दो जगहों

पर घूमना कुछ भारी पड़ गया था लेकिन परिश्रम रंग लाई थी आधे से ज्यादा बच्चे सो गए और कुछ ही बच्चे शिक्षक के साथ होटल में रात के भोजन के लिए गए।

## DAY 2

दूसरे दिन सभी बच्चे जल्दी उठकर तैयार हो गए। हमारे शिक्षक ने दूसरे दिन पर कहा - कहा जाएंगे यह बताया। सुबह का नाश्ता हमने होटल में ही किया हमारे साथ हमारे और एक शिक्षक जो पहले से ही दिल्ली में थे वह जुड़ गए। पहले तय हुआ कि इंडिया गेट जाएंगे। हम सभी झट से तैयार हो गए इंडिया गेट जानें हमारे लिए बस भी तैयार खड़ी थी। करीब आधा घंटे में हम इंडिया गेट पहुँच गए। बहुत विशाल था वह दूर से ही दिखाई पड़ रही थी कि कितनी बड़ी होगी। इंडिया गेट को देखने के लिए अमित चल कर कुल 15-20 मिनट लग गए पहुंचने के लिए।

हमारे एक शिक्षक ने कहा कि दिन से ज्यादा अच्छा यहाँ का रात का माहौल है रात में यहाँ पे बहुत सारे लाइट्स जलाया जाता है और तिरंगा का रंग लहराते रहता है रात में तो आना संभव नहीं था परंतु दिन का दृश्य भी कुछ कम सुंदर नहीं था। यहाँ पर आते ही हिंदुस्तानी होने पर गर्व महसूस हुआ हम सभी ने बहुत देर तक फोटो खिंचवाए और इंडिया गेट में जो भी लिखा हुआ था वह सब जानकारी हमने प्राप्त की।

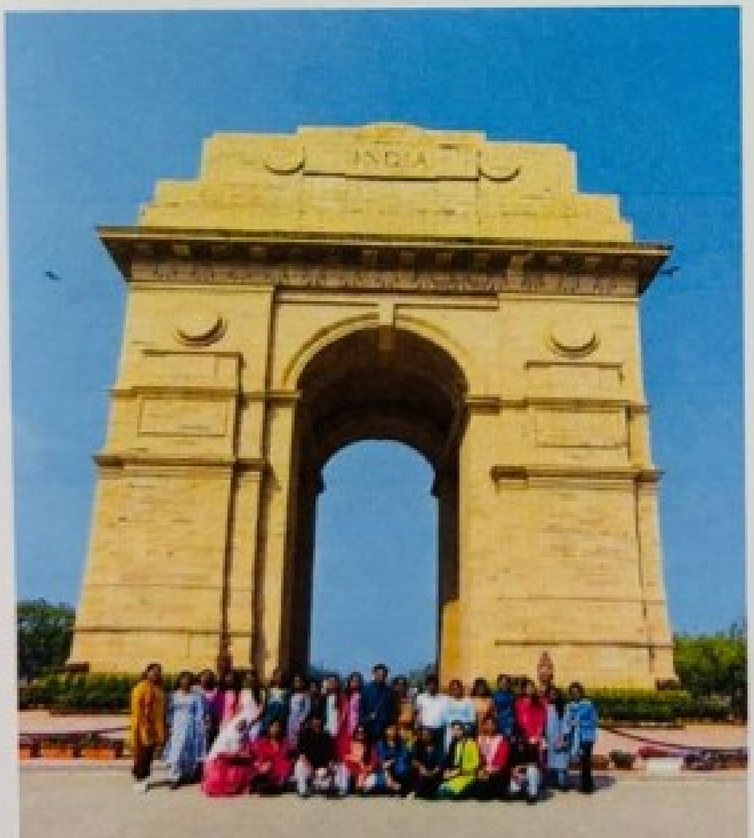


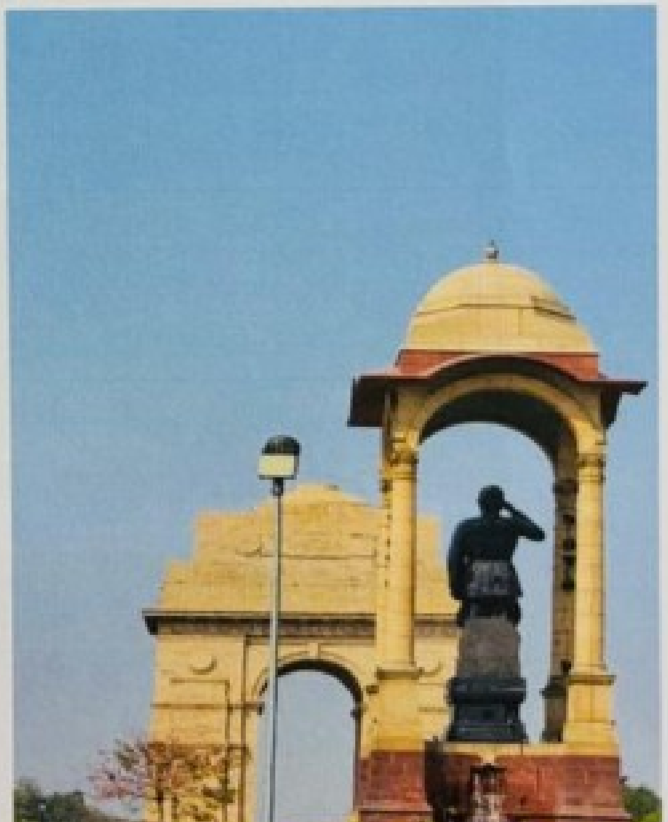

इंडिया गेट दिल्ली का ही नहीं अपितु भारत का महत्वपूर्ण स्मारक है। इंडिया गेट को 80,000 से अधिक भारतीय सैनिकों की याद में निर्मित किया गया था जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में वीरगति पाई थी। यह स्मारक 42 मीटर ऊंची आर्च से सज्जित है और इसे प्रसिद्ध वास्तुकार एडविन ल्यूटियन्स ने डिज़ाइन किया था। इंडिया गेट को पहले अखिल भारतीय युद्ध स्मृति के नाम से जाना जाता था। इंडिया गेट की डिज़ाइन इसके फ्रांसीसी प्रतिरूप स्मारक आर्क- डी- ट्रायोम्फ के समान है।

इंडिया गेट के तल पर एक अन्य स्मारक, अमर जवान ज्योति है, जिसे स्वतंत्रता के बाद जोड़ा गया था। यहाँ निरंतर एक ज्वाला जलती है जो उन अंजान सैनिकों की याद में है जिन्होंने इस राष्ट्र की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

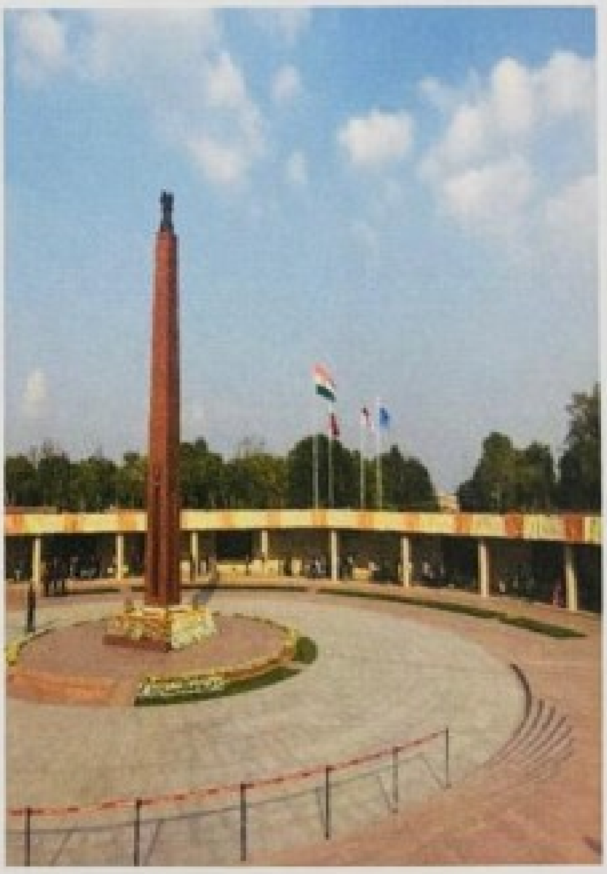

इंडिया गेट के बाद हम गए लोटस टेम्पल, लोटस टेम्पल के आसपास के जगहों में कुछ मेले जैसा दृश्य था वहाँ पर हमने कुछ खाया पिया और फिर लोटस टेम्पल के अंदर प्रवेश होने गए। लोटस टेम्पल के अंदर जाने के लिए हमें अपनी सारी सामान बाहर रखनी थी जैसे कि खाने पीने का कोई भी सामान वहाँ पर अलाउड नहीं था। वहाँ पर पानी का बोतल तक बाहर रख दिया जाता है। लोटस टेम्पल के बारे में जितना सुना था उससे कई गुना सुंदर दृश्य उसको देखने में आया। कमल से भी अधिक सुंदर था यह लोटस टेम्पल। हरियाली ही हरियाली थी, गन्दगी थोड़ी सी भी वहाँ पर नहीं थी स्वच्छ था वह जगह।लोटस टेम्पल के अंदर प्रवेश करने के लिए हमें हमारी जूता सब एक साथ समेटकर दूसरी जगह पर रखनी थी तथा सबको एक कतार में खड़े होकर उसके अंदर प्रवेश करना था लगभग 1 घंटे के बाद हम उसके अंदर प्रवेश कर सके।

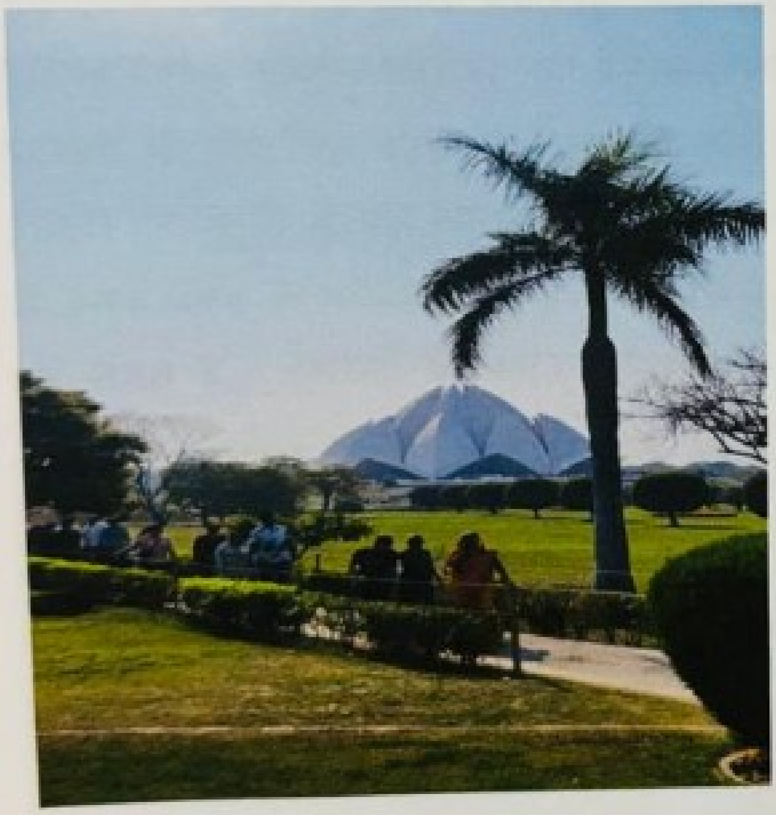

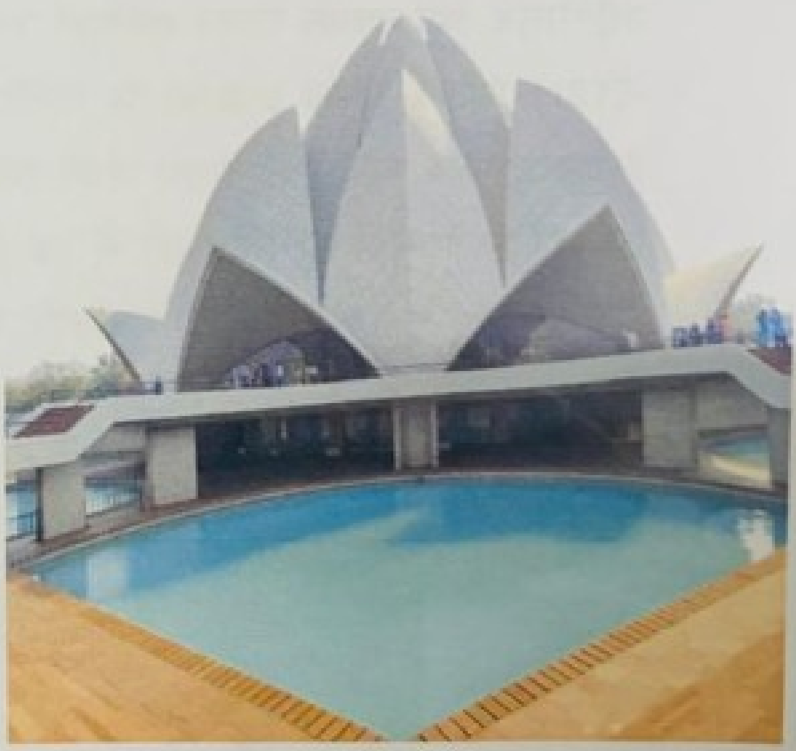

उस जगह के बारे में जानकारी देने के लिए वहाँ के लोगों ने दो गाइड्स रखे थे, उन लोगों ने बताया कि जब हम उनके अंदर प्रवेश करेंगे तो हम अपने मुँह से एक शब्द तक नहीं निकाल सकते हैं वहाँ पर बात करना मना है शांतिपूर्वक वहाँ पर हमे बैठना है और हमारे आराध्य को हमें याद करना है। उन्होंने कुछ और भी इस लोटस टेम्पल के बारे में जानकारी दी जैसे कि नेहरू प्लेस के पूर्व में , यह मंदिर कमल के फूल के आकार में बना है और दुनिया भर में बने सात प्रमुख बहाई मंदिरों में से अंतिम है। 1986 में पूरा हुआ यह हरे-भरे परिदृश्य वाले बगीचों के बीच स्थित है।

यह संरचना शुद्ध सफेद संगमरमर से बनी है, वास्तुकार फुरीबुर्ज़ सभा ने कमल को हिंदू धर्म , बौद्ध धर्म के प्रतीक के रूप में चुना । जैन धर्म और इस्लाम किसी भी धर्म के अनुयायी मंदिर में जाकर प्रार्थना या ध्यान करने के लिए स्वतंत्र हैं।

खिलती हुई पंखुड़ियों के चारों ओर पानी के नौ कुंड हैं, जो प्राकृतिक रोशनी में जगमगाते हैं। शाम के समय जब यह रोशनी से जगमगाता है तो यह शानदार दिखता है।दो-तीन घंटो में हम पूरे लोटस टेम्पल धूम आए।

अब हम ललित साहित्य कला एकेडमी के लिए निकले, बहुत प्रचलित है वह जगह। भारतीय कला के प्रति देश-विदेश में समझ बढ़ाने और प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार ने नई दिल्ली में 1954 में 'राष्ट्रीय ललित कला अकादमी' (नेशनल अकादमी ऑफ़ आर्टस) की स्थापना की थी। इसके लिए यह अकादमी प्रकाशनों, कार्यशालाओं तथा शिविरों का आयोजन करती है। यह प्रतिवर्ष एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी तथा प्रत्येक तीसरे वर्ष 'त्रैवार्षिक भारत' नामक एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी भी आयोजित करती है। अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष डॉ. आनन्द कुमार स्वामी (1877-1947) की स्मृति में एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाता है। ललित कला अकादमी में अनेक प्रकार के कार्यक्रम होते हैं जिन्हें हम मुख्य रूप से निम्नलिखित विभागों में विभक्त कर सकते हैं - प्रदर्शनी, प्रकाशन, निरीक्षण, विचार गोष्ठी, भित्तिचित्र बनाने की कला, देशी

कला संगठनों और प्रांतीय अकादमियों के समन्वित कार्यक्रम को प्रोत्साहित करना, विदेशों से संपर्क और छात्रों एवं कलाकारों का आदान-प्रदान।

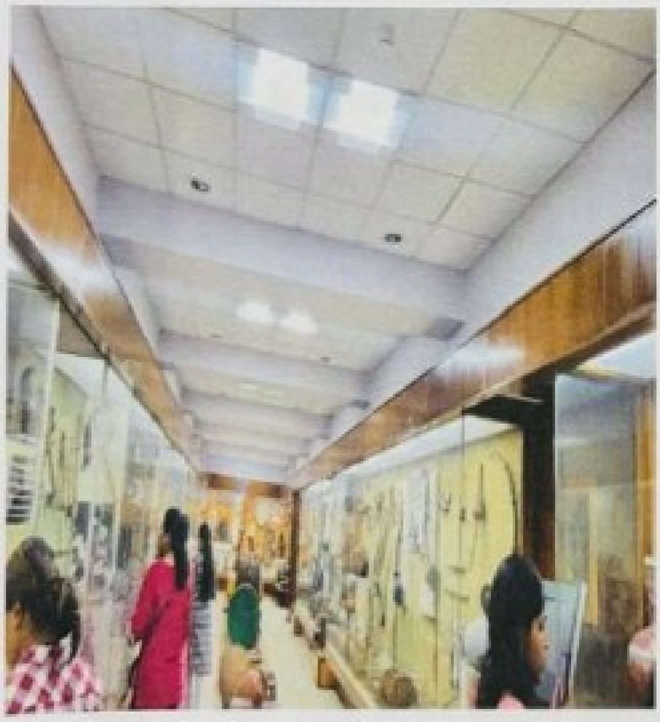

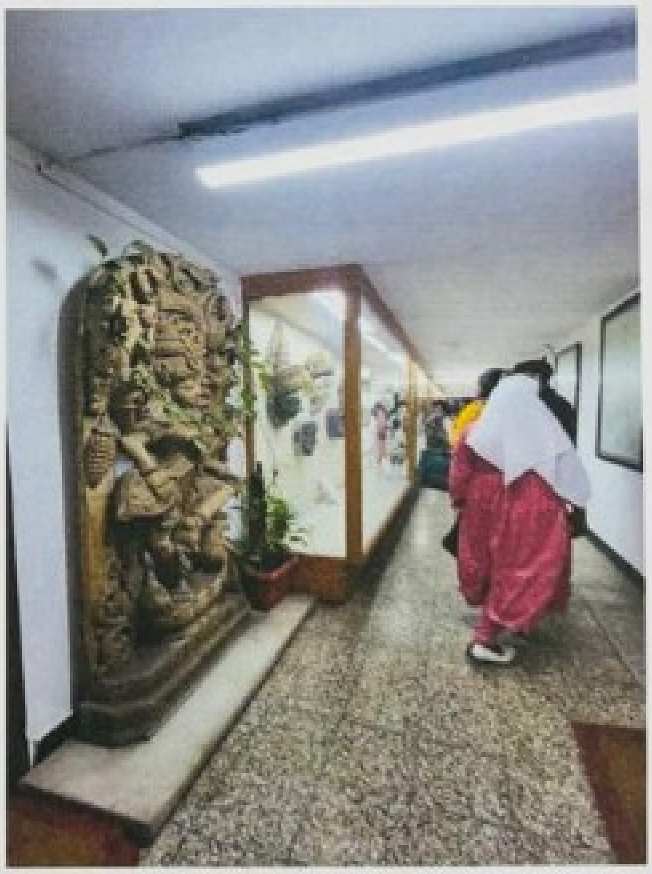

ललित कला एकेडमी के बाद हम गए हुमायुन टॉम्ब दिल्ली में। बहुत ही ज्यादा सुंदरता वह जगह इतने ऐतिहासिक जगह से आकर हमें बहुत कुछ ज्ञात हुआ वहाँ हर एक शिलाओं पे हर एक चीज़ की जानकारी लिखित थी जैसे की हुमायूं का मकबरा, दिल्ली उन भव्य राजवंशीय मकबरों में से पहला है जो मुगल वास्तुकला का पर्याय बन गया था, जिसकी वास्तुकला शैली 80 साल बाद बाद के ताज महल में अपने चरम पर पहुंच गई थी।

हुमायूँ का मकबरा 1560 के दशक में हुमायूँ के बेटे, महान सम्राट अकबर के संरक्षण में बनाया गया था। फ़ारसी और भारतीय कारीगरों ने मिलकर बगीचे-मकबरे का निर्माण किया, जो इस्लामी दुनिया में पहले बने किसी भी मकबरे से कहीं अधिक भव्य था। हुमायूँ का उद्यान-मकबरा चारबाग (कुरान के स्वर्ग की चार नदियों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक चार चतुर्भुज उद्यान) का एक उदाहरण है , जिसमें चैनलों द्वारा जुड़े हुए तालाब हैं। पूर्वी और उत्तरी दीवारों के केंद्र में स्थित मंडपों के साथ बगीचे में दक्षिण और पश्चिम से ऊंचे प्रवेश द्वारों से प्रवेश किया जाता है। हुमायूं के मकबरे की प्रामाणिकता मकबरे, अन्य संरचनाओं और बगीचे के मूल स्वरूप और डिजाइन, सामग्री और सेटिंग को बनाए रखने में निहित है।

मुगल संरचनात्मक शैली के प्रारंभिक चरण का उदाहरण देते हुए, हुमायूं का मकबरा मुगल वास्तुकला के विकास में एक मील का पत्थर है, और रास्ते और चैनलों के साथ बगीचे के मकबरे की मुगल योजना के सबसे पुराने मौजूदा नमूने का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह भव्य पैमाने पर कियोस्क के साथ दोहरे गुंबद वाली ऊंचाई का एक अच्छी तरह से विकसित नमूना है। यह इमारत परंपरा एक सदी बाद निर्मित ताज महल में चरम पर पहुँची। इस शैली का पहला मानकीकृत उदाहरण होने के बावजूद, हुमायूँ का मकबरा उच्चतम क्रम की एक वास्तुशिल्प उपलब्धि है।

भारत के दूसरे मुगल सम्राट हुमायूं का मकबरा उनकी विधवा बिगा बेगम (हाजी बेगम) ने उनकी मृत्यु के 14 साल बाद 1569-70 में 15 लाख रुपये की लागत से बनवाया था। वास्तुकार मिराक मिर्ज़ा गियाथ थे। बाद में इसका उपयोग शासक परिवार के विभिन्न सदस्यों को दफनाने के लिए किया गया और इसमें लगभग 150 कब्रें हैं। इसे उपयुक्त रूप से मुगल राजवंश के क़ब्रिस्तान के रूप में वर्णित किया गया है।

मकबरा स्वयं एक बड़े बगीचे के केंद्र में है, जिसे चार बाह (चार गुना) शैली में बनाया गया है, जिसमें चैनलों से जुड़े पूल हैं। मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर है, और दूसरा प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर है। एक मंडप और स्नानघर क्रमशः पूर्वी और उत्तरी दीवारों के मध्य में स्थित

हैं। मकबरा स्वयं एक ऊँचे, चौड़े, सीढ़ीदार मंच पर है जिसके किनारों पर छोटी-छोटी मेहराबदार कोठरियाँ हैं।

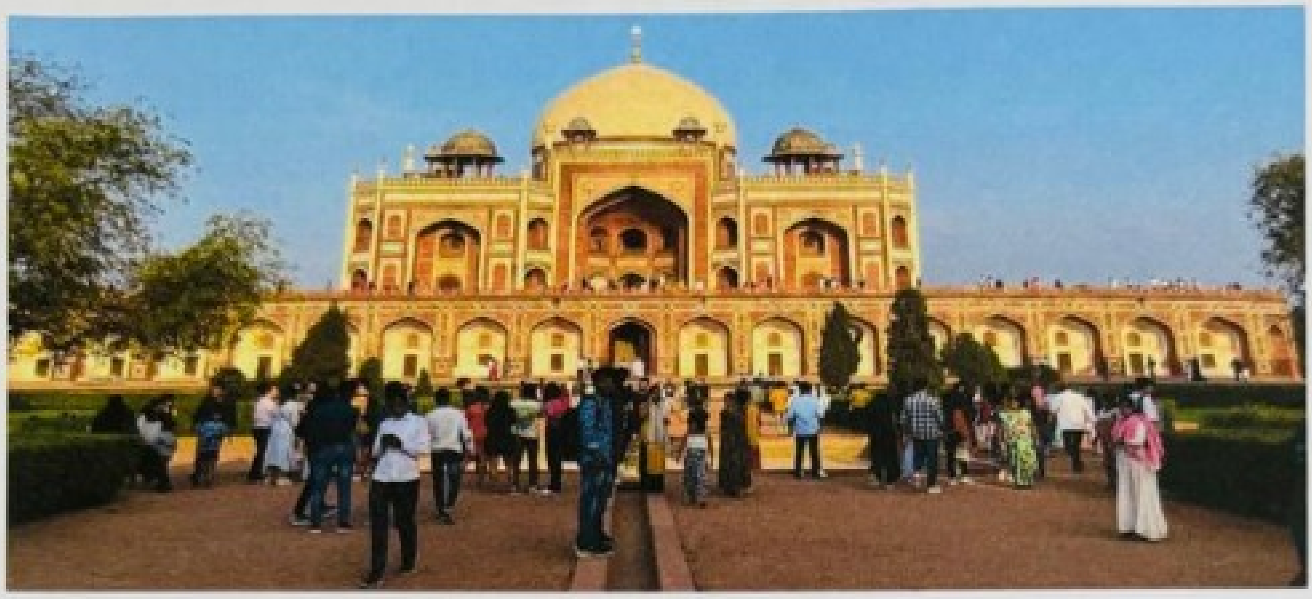

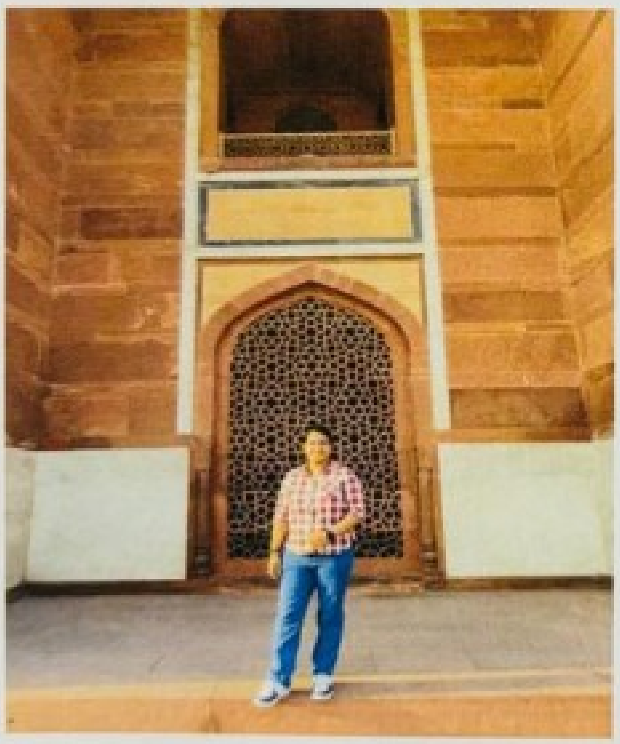

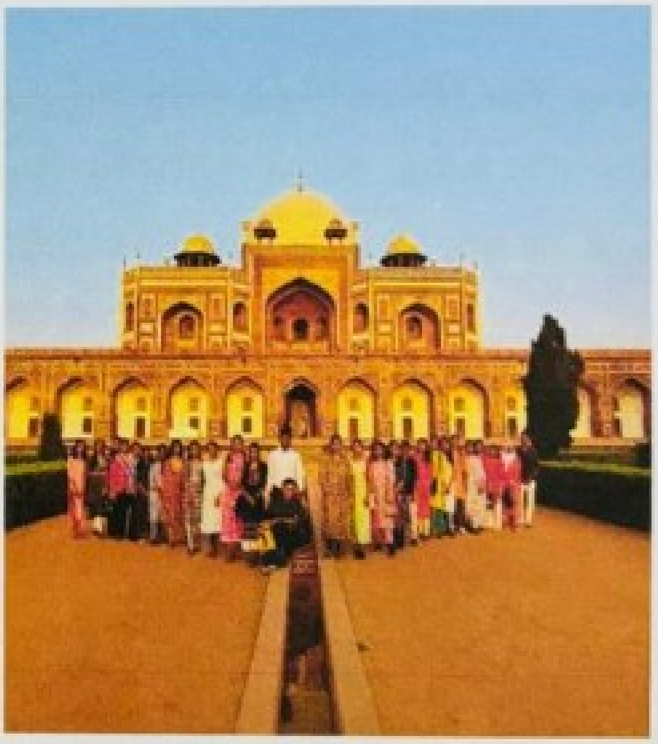

हुमायूँ  टॉम में घूमते हमें 3 घंटे लगभग लगे शाम होने आई थी 6:30 बच गया था। अब बस पकड़ के हम वापस होटल आने लगे तभी हमारे सर ने कहा कि क्यों ना एक मंदिर देखा जाए जो यहीं पर है लक्ष्मीनारायण मंदिर, हम सभी वापस उतरे बस से और श्रद्धापूर्वक मंदिर पर जाने तैयार हुए, यह मंदिर में ना तो मोबाइल लेना अलाउड था और नहीं फोटो खींचना हमें अपना पूरा सामान वहीं पर काउंटर में रखकर अंदर जानी थी। सभी ने अपने अपने मोबाइल तथा सभी इलेक्ट्रॉनिक्स चीजें एक थैली में डालकर काउंटर वाले को दिया और सभी एक कतार में मंदिर का दर्शन करने के लिए तैयार हो गए। इतने थकान के बावजूद मंदिर के अंदर जाते ही सारी थकान दूर हो गई आत्मा को मोह लेने वाली जगह थी वह।

वहाँ पे हमें तिलक तथा प्रसाद दिया गया और हम सभी आधा घंटे तक वहीं पे बैठे रहे। कुछ देर बाद हम वहाँ से प्रस्थान किए और वापस बस में बैठकर होटल तक चल पड़े। इतनी सारी जगह घूमने के बाद अब होटल पहुंचते ही नींद सा आने लगा था सभी बच्चे सो गए कुछ ही बच्चे शिक्षक के साथ खाने गए।

तीसरा दिन महत्वपूर्ण था क्योंकि उस दिन हम यूनिवर्सिटी जाने वाले थे। सारे बच्चे बहुत ज्यादा उत्सुक थे यह देखने के लिए कि दिल्ली यूनिवर्सिटी कितनी बड़ी है और उधर का लाइब्रेरी कितना व्यवस्थित है तथा वहाँ कि शिक्षा की पद्धति कैसी है और भी बहुत सारे विचार मन में आते गए और बस कल सवेरे  का इंतज़ार था।

# DAY 3

हम सुबह जल्दी तैयार होके होटल के नीचे एकत्रित होने आए, सभी सुव्यवस्थित कपड़ों में आए थे क्योंकि आज हमें दिल्ली पर जाना था में प्रसिद्धि यूनिवर्सिटियों में जाना था। हम सुबह का नाश्ता करके बस तक चलते गए और फिर वहाँ से पहले हम हिंदू कॉलेज गए होली के दिन का छुट्टी था इसलिए ज्यादातर बच्चे नहीं दिखाई दिए तथा शिक्षक गण भी वहाँ पे नहीं थे। हम दूर से आए देख सिक्योरिटी गार्ड ने अंदर जाके पूछा कि हम आ सकते हैं कि नहीं उन्होंने हमें आने की इजाजत दी तथा सम्मान सहित हमें पूरे यूनिवर्सिटी दिखाई। वे खुश थे कि हम गोवा से आए थे उनका यूनिवर्सिटी भ्रमण करने। हिंदू कॉलेज नई दिल्ली , भारत में दिल्ली विश्वविद्यालय का एक घटक कॉलेज है । 1899 में स्थापित, यह भारत के सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध कॉलेजों में से एक है। नवीनतम राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) के अनुसार इसे भारत के कॉलेजों में दूसरा सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। यह विज्ञान , मानविकी , सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम

प्रदान करता है , इसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा जैव प्रौद्योगिकी विभाग के लिए 'स्टार कॉलेज' का दर्जा भी दिया गया है। टीवी के जाने माने हस्तियां जैसे इम्तियाज़ अली, अर्जुन रामपाल, आदर्श शास्त्री, अर्नब गोस्वामी, गौतम गंभीर, टीसका चोप्रा मनोज कुमार, विशाल भारद्वाज, आदि कई जाने माने हस्तियां भी इस कॉलेज में पढ़े है उन सब की एक सूची कॉलेज के भीतर एक कतार में लगी हुई थी यह देख कर हम अचंभित हो गए। यहाँ की शिक्षा पद्धति भी बहुत अच्छी है। यहाँ के शिक्षक गणों ने भी हमारी बहुत अच्छे

से स्वागत की उन्होंने हमारे साथ फोटो खिंचवाया तथा हिंदू यूनिवर्सिटी तथा हिंदू कॉलेज वापस भ्रमण करने की आमंत्रण दी।

इसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी, वहाँ भी छुट्टी चल रही थी दिल्ली में होली का त्योहार 3 दिन पूर्व से ही शुरू हो जाता है कारणवश यह यूनिवर्सिटी भी बंद थी परंतु हमने अफसरों से वार्तालाप कर के भीतर भ्रमण का परमिशन ले लिया। वहाँ हमें कोई शिक्षक गणों ने उपदेश तो नहीं दिया परंतु हम स्वयं ही वहाँ पर भ्रमण करके यह अनुभव किये की कितना बड़ा है यूनिवर्सिटी और कितनी बड़ी इनकी लाइब्रेरी है वहाँ की कक्षा भी ठीक ठाक ही थी कॉलेज के बाहर एक गार्डन जैसा सजाया हुआ था जो बेहद ही सुंदर था वहाँ हमारे एक पीएचडी छात्र ने अपने दोस्त को लाकर हमें पूरी सूचना दी कि यह यूनिवर्सिटी कब बनीं और इसके पीछे की इतिहास क्या है उन्होंने कहा दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना 1922 में केंद्रीय विधान सभा के एक अधिनियम द्वारा की गई थी और इसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा एक उत्कृष्ट संस्थान (आईओई) के रूप में मान्यता प्राप्त है। विश्वविद्यालय के उत्तरी और दक्षिणी परिसरों में 16 संकाय और 86 विभाग हैं, और शेष कॉलेज पूरे क्षेत्र में हैं। इसमें 91 घटक कॉलेज हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय दुनिया की सबसे बड़ी विश्वविद्यालय प्रणालियों में से एक है , जिसके परिसरों और संबद्ध कॉलेजों में 400,000 से अधिक छात्र हैं। भारत के उपराष्ट्रपति विश्वविद्यालय के चांसलर के रूप में कार्य करते हैं। राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क 2023 द्वारा विश्वविद्यालय को 11वां स्थान दिया गया है ।

वर्तमान विश्वविद्यालय भारत के सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक बन गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुछ कॉलेज छात्रों को छात्रावास की सुविधा प्रदान करते हैं, लेकिन यह सुविधा कुछ विशिष्ट कॉलेजों तक ही सीमित है। छात्रावासों का आवंटन भी योग्यता के आधार पर किया जाता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के केवल 20 कॉलेज ही छात्रों को छात्रावास की सुविधा प्रदान करते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में बहुत से जाने माने हस्तियां भी पढ़ के जा चुकें हैं जैसे शाहरुख खान, सिद्धार्थ मल्होत्रा, अमिताभ बच्चन, किरण बेदी, मनोज बाजपेई, गौरी खान, मनीष पॉल, अनुराग कश्यप आँधी जानी मानी हस्तियां यहाँ पर पढ़ें। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हम यह विश्वविद्यालय मैं आकर यह सब जान पा रहे है।

इसके बाद हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय गए। वहाँ पर हम करीब दोपहर के समय पहुंचे हमें लेने के लिए वहाँ के हिंदी विभाग के अध्यक्ष आये थे। वे बहुत ही सीधा साधा इंसान तथा उनके व्यवहार से यह नहीं लग रहा था कि वे इतने बड़े यूनिवर्सिटी के शिक्षक होंगे। उन्होंने हमें पूरा जेएनयू घुमाया तथा भोजन का व्यवस्था भी उन्होंने करवाया। हम जीस समय पर गए थे तब वहाँ पर इलेक्शन चल रहा था। टीवी में इस इलेक्शन के बारे में बहुत सुना था आज साक्षात अँ यह अनुभव कर पा रहे है कि कितना शोर शराबा तथा कितने धूम धाम से ये लोग इलेक्शन की चयन कर रहे हैं।

हमे वहाँ पे हिंदी विभाग के कुछ छात्र भी मिले जिन्होंने हमें इस विश्वविद्यालय की विशेषताओं पर बात की उन्होंने कहा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्थापना 1969 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी । इसका नाम भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा गया था । जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विभाग 20 स्कूलों और केंद्रों में विभाजित हैं। हम वहाँ के लाइब्रेरी में गए वहाँ की लाइब्रेरी इतनी विशाल थी कि एसी एक पुस्तक नहीं होगी जो वहाँ पर उपलब्ध न हो। सारी पुस्तकें सुव्यवस्थित वहाँ पर थी और जीस जीस विषय में चाहिये उस विषय में वहाँ पर आपको प्राप्त होती। इस लाइब्रेरी से हमें यह भी पता चली की यह लाइब्रेरी 24 घंटे चालू रहती है, बच्चे यहाँ पर दिन रात पढ़ाई करते हैं यहाँ तक कि रविवार  भी यह लाइब्रेरी बंद नहीं होती।

यहाँ के बच्चे अपने खाली समय में लाइब्रेरी में आके बैठते हैं और अपना पढ़ाई करते हैं इससे यह पता चलता है कि कितने शिक्षित लोग रहे होंगे। यहाँ आके मालूम पड़ा कि हम कितने कम पड़ते हैं यहाँ के बच्चे रात दिन पढ़ते हैं खाना पीना भूलकर वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने पर जुड़ जाते हैं यहाँ पर आके हम प्रोत्साहित हुए तथा अपने शिक्षक को धन्यवाद किया क्यों उन्होंने हमें ऐसे जगहों पर लाकर निस्संदेह हमारा मनोबल बढ़ाया।

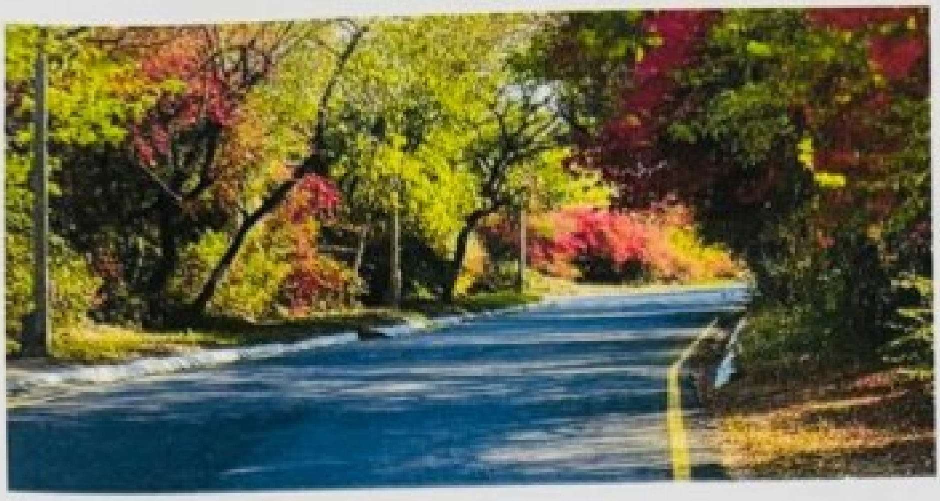

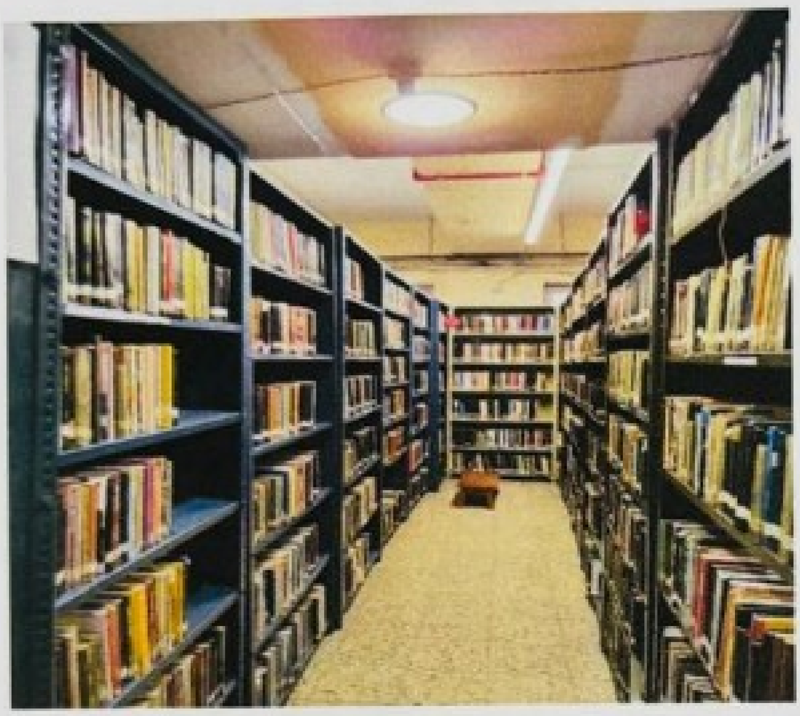

यहाँ से हम कुतुब मीनार गए, शाम का वक्त था, वहाँ पर बहुत भीड़ थी हम बस से उतरकर पहले कूपन लाने गए और फिर कुतुबमीनार भ्रमण के लिए निकल पड़े जितना सुना था उससे कई गुना लंबा और चौड़ा था कुतुब मीनार उसको ताकने के लिए हमें गर्दन एकदम से ऊपर उठानी पड़ती थी। कुतुब मीनार के अंदर जाते वक्त हमें वहाँ कुतुब मीनार के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है जो उन शिला लेखों पर लिखा हुआ होता है। वहाँ लिखा गया है कि यह दिल्ली का एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है।

इसकी ऊँचाई 73 मीटर (239.5 फीट) और व्यास १४.३ मीटर है, जो ऊपर जाकर शिखर पर 2.75 मीटर (9.02 फीट) हो जाता है। इसमें 379 सीढियाँ हैं। मीनार के चारों ओर बने अहाते में भारतीय कला के कई उत्कृष्ट नमूने हैं, जिनमें से अनेक इसके निर्माण काल सन 1192 के हैं। यह परिसर युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में स्वीकृत किया गया है। कहा जाता है कि ये मीनार पास के 27 किला को तोड़कर और दिल्ली विजय के उपलक्ष्य मे किला के मलबे से बनाई गयी थी। इसका प्रमाण मीनार के अंदर कुतुब के चित्र से मिलता है। एक स्थान के

अनुसार ये मीनार वराहमिहिर का खगोल शास्त्र वेधशाला थी। कुतुब मीनार परिसर में एक कुतुब स्तंभ भी है जिसपर जंग नही लगती है। इसे आप नीचे फोटो मे देख सकते है।

भीतर जाते ही हमें बहुत हरियाली नजर आई। वहाँ बगीचा जैसा सजाया गया था और मीनार के आसपास पूरे लोगों की भीड़ जमी थी। देश विदेशों से पर्यटक यहाँ पर भ्रमण करने आते हैं। मीनार के आसपास की जगहों का चित्रण भी बहुत यादगार रहा।   कुतुब मीनार में शाम का दृश्य अत्यंत सुंदर था। ऐसे लग रहा था मानव हम कहीं समुद्र किनारे में आए हो इतनी सुंदर सूर्यास्त हमने पहले कभी नहीं देखी।

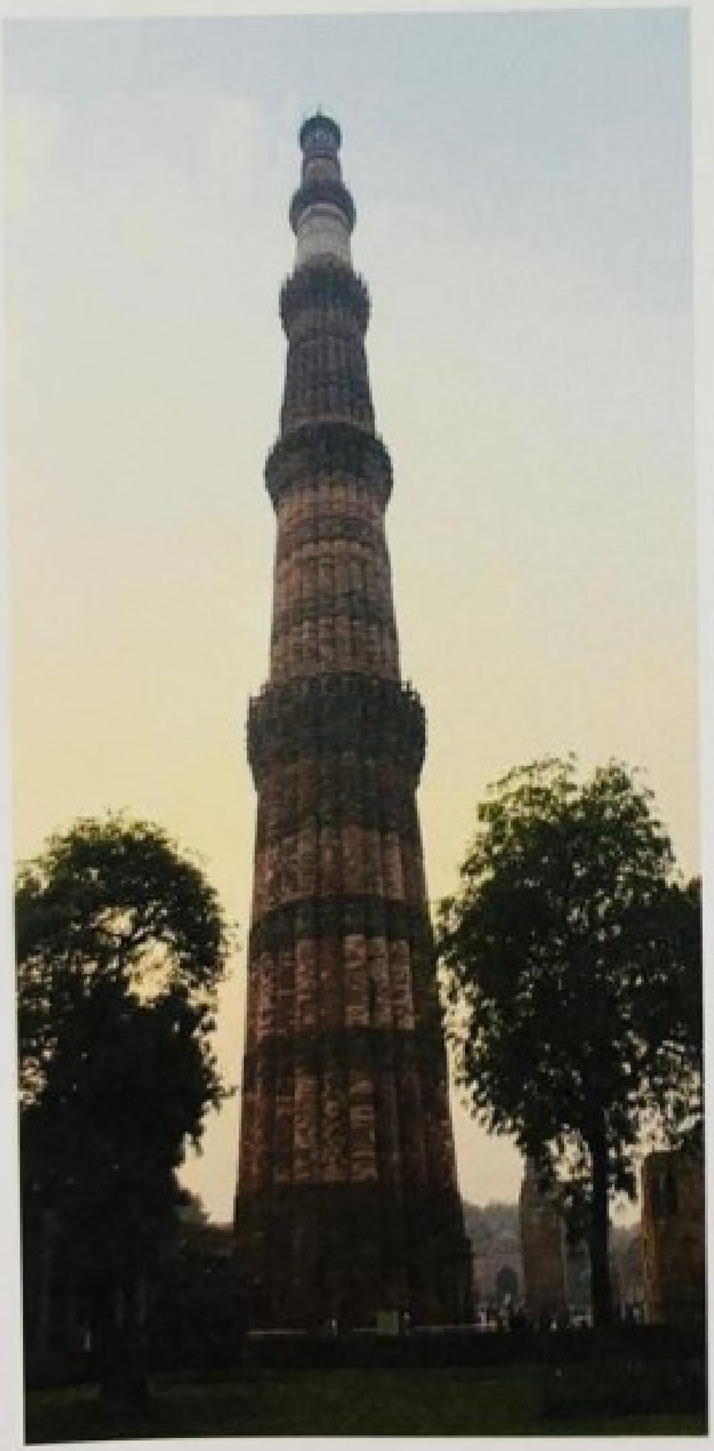

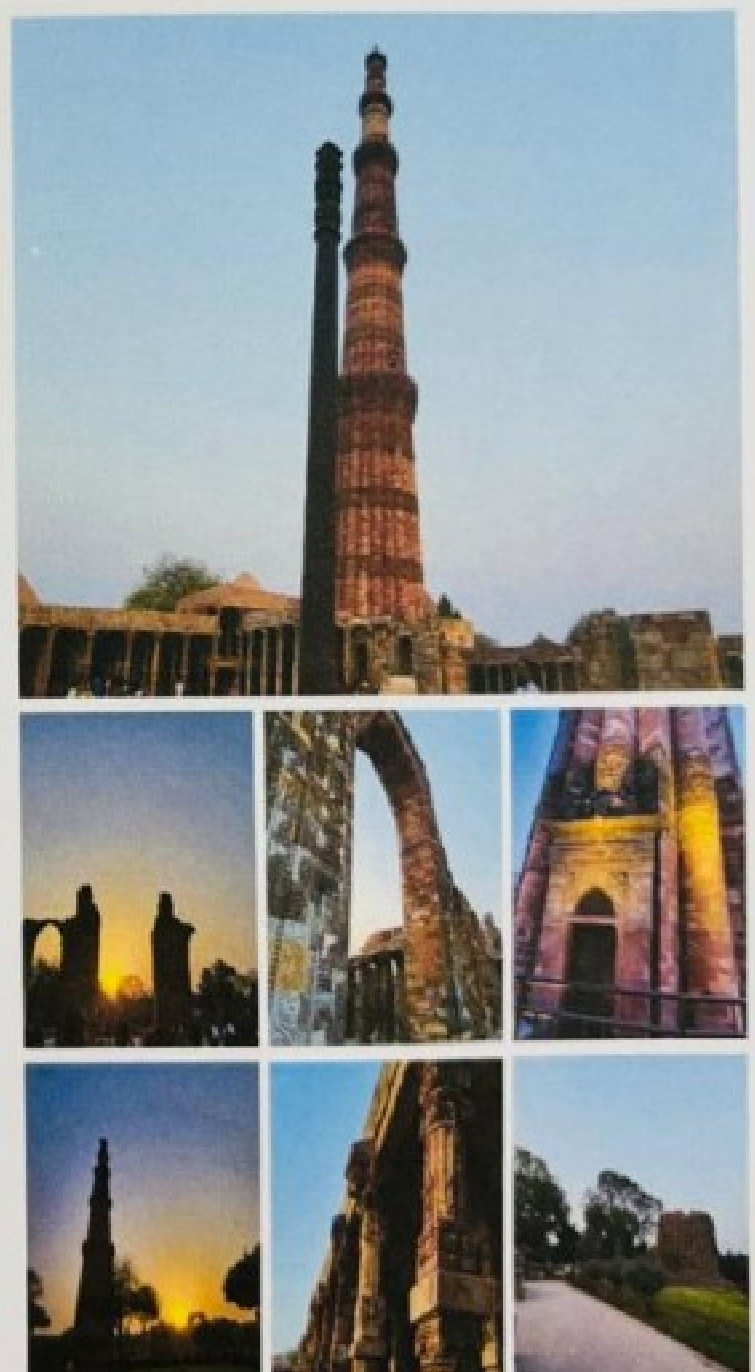

हमें होटल आते आते हैं रात के 9:00 बज गए थे भूख लग रहा था लेकिन बाहर जाके होटल में खाने की ताकत हम मैं और नहीं थी हम बहुत ज्यादा थक गए थे इसलिए हमने सोचा कि होटल से ही कुछ मंगवा लेते हैं, क्योंकि अगली सुबह हमें 3:00 बजे उठनी थी हमें जाना था ताज महल मथुरा एवं वृंदावन। सभी बच्चे एक दम से आके लुढ़क गए और कल के भ्रमण के लिए सपने देखने लगे क्योंकि ताजमहल जाना सभी का सपना होता है तथा मथुरा और वृंदावन जैसी जगहों पर भ्रमण करना कोई सपने से कम नहीं।

## DAY 4

सभी सुबह 3:00 बजे उठके तैयार हो गए एवं होटल से निकलते निकलते और बस में चढ़ते हमें 4:00 बज चुकी थी। हम नई दिल्ली से आग्रा तक जाने वाले थे पहले ताजमहल के भ्रमण करने। हमें 6 घंटे की दूरी तय करनी थी बी में बस रुका और हम एक ढाबे पर नाश्ता किए, कुछ बच्चों की तबियत खराब थी इसलिए शिक्षकों को भी थोड़ी परेशानी हुई। हम ताज महल सुबह के 9:30 बजे पहुंचे। वहाँ पर बहुत ज्यादा भीड़ था कूपन लाने के लिए ही हमें कतार में 1 घंटे लग गए। गेट से ताजमहल तक कुछ 15-20 मिनट तो लग ही जाएंगे।

उस दिन बहुत धूप थी और धूप में ताजमहल और भी ज्यादा चमक रहा था जो भी बच्चे अपनी तबियत को लेकर परेशान थे व ताजमहल को देखते ही सब कुछ भूल गए। ताजमहल में हमने खूब फोटो निकाला तथा वहाँ पर हमारे शिक्षक ने एक गाइड को नियुक्त किया जो हमें हर एक चीज़ की बारीकी से जानकारी दें। गाइड के जानकारी को सुन कर हम सभी ताजमहल की रहस्य को और भी ज्यादा गहराई से जानने लगे। शाहजहान ने अपनी प्रिय पत्नी, मुमताज महल की कब्र के लिए बनवाया था ; इसमें स्वयं शाहजहाँ की कब्र भी है। मकबरा 17-हेक्टेयर परिसर का केंद्रबिंदु है, जिसमें एक मस्जिद और एक गेस्ट हाउस शामिल है, और यह औपचारिक उद्यानों में स्थापित है जो तीन तरफ से एक खंभों वाली दीवार से घिरा है।

23 फीट (7 मीटर) ऊंचे चौड़े चबूतरे के बीच में स्थित , यह मकबरा सफेद संगमरमर का है जो सूरज की रोशनी या चांदनी की तीव्रता के अनुसार रंगों को प्रतिबिंबित करता है। इसके चार लगभग समान अग्रभाग हैं, प्रत्येक के शीर्ष पर 108 फीट (33 मीटर) तक ऊंचा एक चौड़ा केंद्रीय मेहराब है और छोटे मेहराबों को शामिल करते हुए चैंफर्ड (तिरछे) कोने हैं। राजसी केंद्रीय गुंबद, जो अपने अंतिम सिरे पर 240 फीट (73 मीटर) की ऊंचाई तक पहुंचता है , चार छोटे गुंबदों से घिरा हुआ है। मुख्य गुंबद के अंदर की ध्वनिकी के कारण बांसुरी का एक स्वर पांच बार गूंजता है। मकबरे का आंतरिक भाग एक अष्टकोणीय संगमरमर कक्ष के चारों ओर व्यवस्थित है जो कम नक्काशी वाली नक्काशी और अर्द्ध कीमती पत्थरों ( पिएट्रा ड्यूरा ) से अलंकृत है। इसमें मुमताज महल और शाहजहाँ की कब्रें हैं। वे झूठी कब्रें बारीक गढ़ी हुई संगमरमर की जाली से घिरी हुई हैं। कब्रों के नीचे, बगीचे के स्तर पर, असली ताबूत पड़ा हुआ है। केंद्रीय भवन से अलग, चौकोर चबूतरे के चारों कोनों पर सुंदर मीनारें खड़ी हैं।

बगीचे के उत्तर-पश्चिमी और उत्तरपूर्वी किनारों के पास मकबरे के दोनों ओर क्रमशः दो सममित रूप से समान इमारतें हैं - मस्जिद, जो पूर्व की ओर है, और उसका जवाब , जो पश्चिम की ओर है और सौंदर्य संतुलन प्रदान करता है। संगमरमर की गर्दन वाले गुंबदों और वास्तुशिल्प के साथ लाल सीकरी बलुआ पत्थर से निर्मित , वे मकबरे के सफेद संगमरमर के साथ रंग और बनावट दोनों में भिन्न हैं।

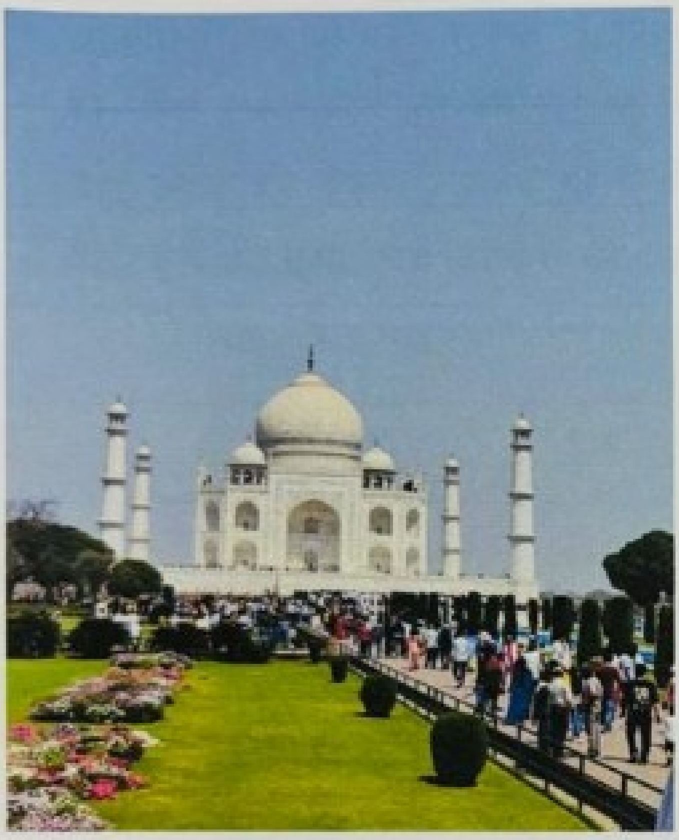

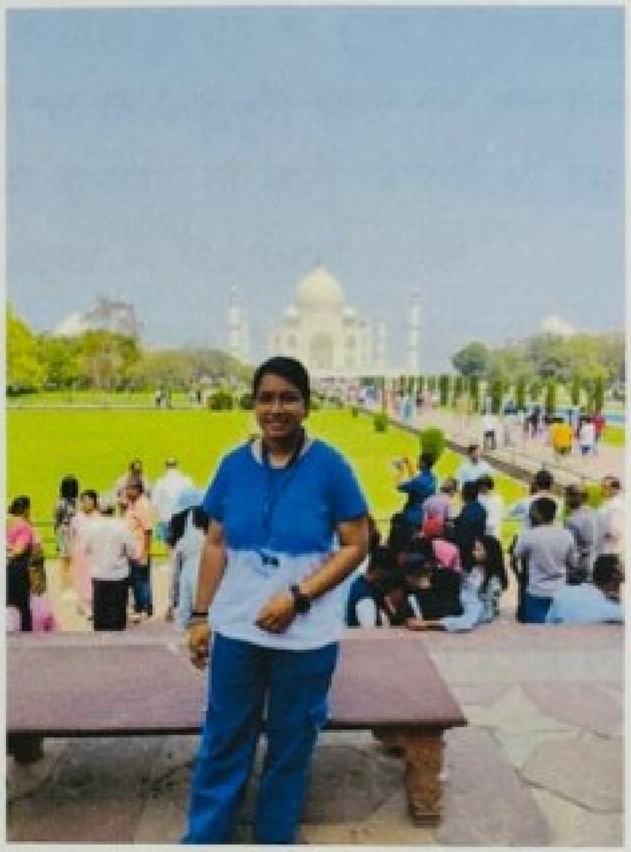

ताजमहल के बाहर ही नहीं ताजमहल के अंदर की सौंदर्यता भी कुछ कम नहीं थी ताजमहल में लगे ला फिसला जूली की जो खूबसूरती है वह अनमोल है। बस जायज ही ऐसा आविष्कार इस युग में करना असंभव है इतनी गहराई से चिंतन मनन करके शाहजहाँ ने जो यह बनाई थी यह काबिले तारीफ है।

ताज महल घूमने के बाद हम सभी ने ताजमहल के बाहर बैठे दुकानों पर कुछ खरीदारी की अद्भुत चीजें थी वहाँ पर। चीजें खरीदने के पश्चात हम भोजन करने होटल में गए भोजन भी बढ़िया था। भोजन करके हमें निकलते निकलते करीब 4:00 बज गए। हमें मथुरा जानी थी काफी वक्त हो गया था अभी मथुरा पहुंचने में भी हमें देरी होगी यह सोचकर हम जल्दी जल्दी बस में चढ़े और मथुरा धाम जाने के लिए तैयार हो गए।

मथुरा में यह हमारी पहली होली होगी भाग्यवान व्यक्ति ही इसका लाभ उठा सकता है यह सोचकर हम सभी अत्यंत प्रसन्न थे हम सभी के मन में एक धार्मिक मानसिकता विद्यमान हो गयी अब्बास श्रीकृष्ण के नाम पर हम जल्दी से पहुँच जाए यही उम्मीद थी।

हम शाम के 7:00 बजे मथुरा पहुंचे और जल्द से जल्द अपनी सारी सामान काउंटर पर रख कर भगवान के दर्शन के लिए दौड़ पड़े हम भाग्यवान थे कि मथुरा में हमें कृष्ण जी के दर्शन प्राप्त हुई तथा काल कोठरी में जाने की भी सौभाग्य हमें मिली। होली की दिवस में मथुरा में अत्यधिक भीड़ थी सभी के मन में और सभी के दिलों में जय श्री कृष्ण की नारा गूंजती रहती थी। यहाँ आकर ऐसा मन कर रहा था कि यहीं पर रह जाएं और वापस हम जाए हीना। परन्तु यहाँ ज्यादा देर रुकना असंभव था क्योंकि हमें वृन्दावन भी जानी थी फिर भी हम कुछ देर बैठे ,कुछ देर घूमे, कुछ खरीदारी की और वृन्दावन के लिए रवाना हो गए।

मथुरा से बाहर आकर हम वृंदावन तक बस रुक आए रात के करीब 9:30 बज चुकी थी हमें लगा था वृंदावन का गेट बंद हो चुका होगा। परन्तु वहाँ के लोगों ने कहा कि यह खुली है होली के त्योहारों में यह जल्दी बंद नहीं होती। बस से उतार कर हमें ऑटो रिक्शा करनी पड़ी क्योंकि वहाँ तक बस नहीं जाती है।

वृंदावन पहुँच  मे एक अलग सा वातावरण हो गया था हर जगह बस राधे राधे का उच्चारण हो रहा था, माहौल अत्यधिक धार्मिक था एवं ह्रदय में एक संतुष्टि सी हो रही थी। करीब 15 मिनट के बाद हम वृंदावन पहुंचे वहाँ हमें एक व्यक्ति मिले जो हमें इस जगह के बारे में बताएं। हमने उनसे पूछा कि मथुरा में इतनी भीड़ भाड़ थी इतने सिक्योरिटी थी यहाँ पर ऐसा कुछ क्यों नहीं है वे बोले के पिता कभी अपने बच्चों को बुल आने के लिए उनको कतार में नहीं खड़े करते यह सुनकर हम अत्यधिक भावुक हुए। उन्होंने हम से कहा कि वृंदावन एक ऐसी जगह है जहाँ पर कृष्ण जी का ह्रदय अवस्ता था भले ही वहाँ मथुरा चले गए थे परंतु उनका ध्यान हमेशा वृंदावन की ओर ही आकर्षित था। नंदलाला और यशोदा माँ ने उन्हें जितनी प्रेम तथा राधा ने और वृंदावनवासी ने उनको जितना प्रेम दिया वह कभी भूल नहीं सके।

वृन्दावन में गायों की भीड़ जमी थी यहाँ पर गायों को पूजा क्या करते हैं। इस बार होली हमने श्रीकृष्ण के हाथ से ली इससे ज्यादा सौभाग्यशाली शायद ही इस दुनिया में कोई हो। हमने वृंदावन के संस्थान के लिए कुछ दान भी किए। हमें वहाँ के पुजारी ने प्रसाद सहित एक तुलसी की माला दी और भगवान के होने का आभास दिलाया। वहाँ से निकलते निकलते हमें करीब एक घंटा हो गया। बस में बैठते ही सभी संतुष्टि से सो गए कुछ देर बाद बस एक ढाबा में रुका कुछ ही बच्चे उतरे और अपने लिए कुछ खाने के लिए लिए। बस अभी वापस नई दिल्ली की ओर रवाना हो रही थी हम रात के 3:00 बजे दिल्ली पहुंचे और वहाँ से तुरंत होटल गए होटल जाते ही हम सब सो गए। दूसरी सुबह हमें 8:00 बजे उठने के लिए कहा गया। हमारी आखिरी दिन थी और जगह घूमने की कई सारी बची हुई थी।

## DAY 5

आज हमारे टूर का आखिरी दिन था। आज हमें छे से सात जगह घूमाने की तैयारी की गई पहले हम अग्रसेन की बावली देखने गए। इस बावड़ी में सीढ़ीनुमा कुएं में करीब 105 सीढ़ीयां हैं। 14वीं शताब्दी में महाराजा अग्रसेन ने इसे बनाया था। सन 2012 में भारतीय डाक अग्रसेन की बावड़ी पर डाक टिकट जारी किया गया। क़रीब 60 मीटर लंबी और 15 मीटर ऊंची इस बावली के बारे में विश्वास है कि महाभारत काल में इसका निर्माण कराया गया था। यह दिल्ली की उन गिनी चुनी बावड़ीयों में से एक है, जो अभी भी अच्छी स्थिति में हैं। अग्रसेन की बावली दिल्ली का एक लोकप्रिय ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। बॉलीवुड की लोकप्रिय फिल्म पीके के कुछ सीन यहां फिल्माए गए थे।

अग्रसेन की बावली देखने के बाद हम राजघाट पहुंचे वहाँ जाकर यह जानकारी मिली की राजघाट भारत के दिल्ली में एक स्मारक परिसर है । पहला स्मारक महात्मा गांधी को समर्पित था जहां 31 जनवरी 1948 को उनके दाह संस्कार के स्थान को चिह्नित करने के लिए एक काले संगमरमर का मंच बनाया गया था और इसके एक छोर पर एक अनन्त लौ थी। दिल्ली के रिंग रोड पर स्थित , जिसे आधिकारिक तौर पर महात्मा गांधी रोड के नाम से जाना जाता है, एक पत्थर का फुटपाथ उस दीवार वाले घेरे की ओर जाता है जहां स्मारक स्थित है। बाद में जवाहरलाल नेहरू , लाल बहादुर शास्त्री , इंदिरा गांधी , राजीव गांधी , चरण सिंह और अटल बिहारी वाजपेयी सहित अन्य प्रमुख लोगों के स्मारकों को शामिल करने के लिए स्मारक परिसर का विस्तार किया गया।

यहाँ से होकर हम राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय पहुंचे। महात्मा गाँधी के लिए जितनी सम्मान हमारे दिल में बरकरार थी उससे दुगुनी सम्मान वहाँ जाकर हम उनकी करने लगे। उन्होंने भारतवासियों के लिए जो बलिदान दिया है उसके लिए उन्हें सब की तरफ से कोटि कोटि नमन। संग्रहालय में एक व्यक्ति थे जिन्हें गाँधीजी के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान था उन्होंने हमें हर एक चीज़ गाँधी जी के जीवन से जुड़ी हुई बातें बताई, बस बिना हिचकी चाय उन्होंने हमारे सवालों का जवाब दिया। राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय गैलरी में बड़ी संख्या में महात्मा गांधी की पेंटिंग और व्यक्तिगत वस्तुएं हैं । संग्रह में सबसे उल्लेखनीय वस्तुएँ हैं विलमिया मुलर ओग्टेरोप द्वारा रचित एक सत्याग्रह वुडकट, गांधीजी की चलने की छड़ी में से एक, गांधीजी द्वारा हत्या के समय पहनी गई शॉल और धोती, गांधीजी को मारने के लिए इस्तेमाल की गई गोलियों में से

एक और उनका अस्थिकलश। संग्रहालय में गांधीजी के कुछ दांत और उनकी हाथी दांत की टूथपिक भी प्रदर्शित है। संग्रहालय की गैलरी शहीद गैलरी, स्मारक गैलरी, आर्ट गैलरी हैं जहां गांधीजी पर बनी कलाएं देखने के लिए खुली हैं। संग्रहालय में एक सामान्य फोटो गैलरी भी शामिल है।

संग्रहालय में हर एक प्रश्न का जवाब था, सिर्फ जवाब ही नहीं प्रमाण सहित जवाब दे गांधीजी के हर एक वस्तु को इन्होंने बड़े संभालकर रखे थे इस गाड़ी से उन्हें लाया गया, इस कुर्सी पर बैठकर वो लोगों को निर्देश देते थे, इस बंदूक से उनकी मृत्यु हुई, यह सब जानकारी प्रमाण सहित वहाँ पर मौजूद थे। हम बड़े भाग्यशाली हैं कि इन वस्तुओं को हमे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

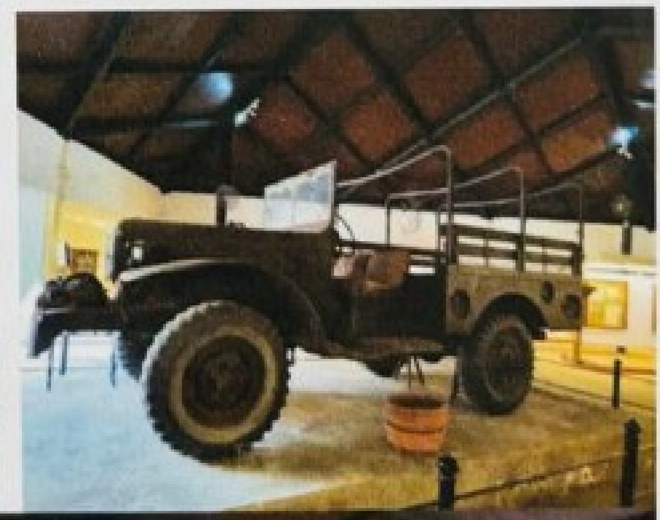

संग्रहालय से होकर हम जामा मस्जिद गए। जामा मस्जिद दिल्ली की प्रमुख मस्जिद है, वह स्थान जहां शहर के मुसलमान पारंपरिक रूप से शुक्रवार की सामुदायिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं। जामा मस्जिद और उसका प्रांगण सड़क से 30 कदम से भी अधिक ऊंचे स्थान पर खड़ा है, जिससे मस्जिद के आसपास के क्षेत्र का शानदार दृश्य दिखाई देता है।

जामा मस्जिद सऊदी अरब के पवित्र शहर मक्का की ओर उन्मुख है , जो पश्चिम में स्थित है। मस्जिद भवन के पूर्वी प्रवेश द्वार के सामने एक खुला प्रांगण कम से कम 325 फीट (99 मीटर) वर्ग का है और इसमें 25,000 लोग रह सकते हैं।

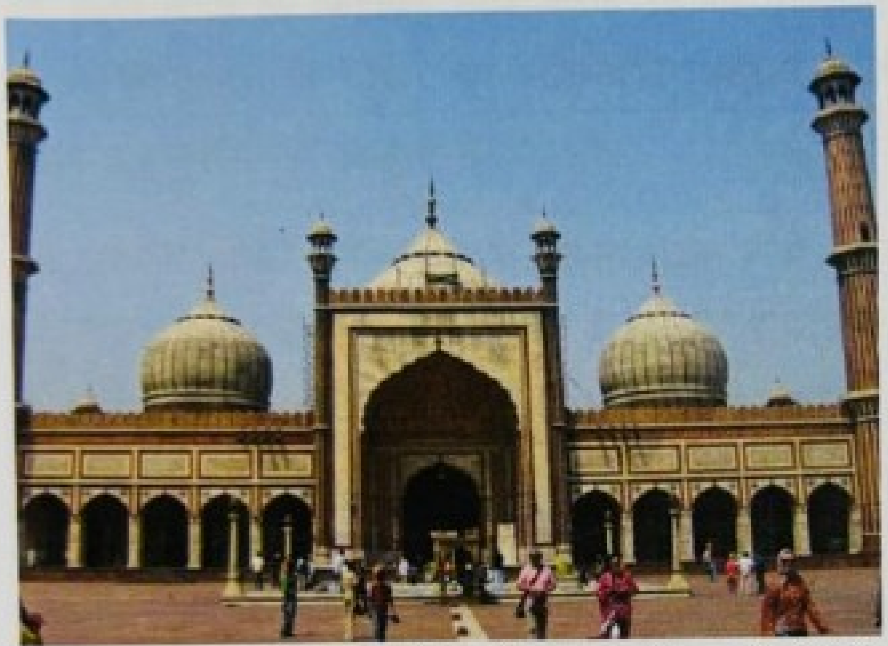

हम बाल भवन भी गए थे वहाँ पर हमने बच्चों के लिए अनेक प्रकार के खेल देखें। आई नो के साथ विभिन्न प्रकार के चित्रों तथा बच्चों द्वारा किये गए बहुत सारी चीजे वहा पर उपलब्ध थीं। बाल भवन में हरियाली छाई हुई थी और वहाँ पर पक्षियों का डेरा भी था। पूरे बाल भवन घूमने के लिए एक रेल की तैयारी भी वहाँ पर मौजूद थीं जिसे चाहिए वो उस पर सवारी कर पूरे बाल भवन का आनंद उठा सकता था। जामिया मस्जिद से निकलने पर कुछ ही देर बाद

बारिश शुरू हुई हम सभी बस में करीबन 10 मिनट तक बैठे उसके उपरांत लाल किला जाने के लिए निकल पड़े लाल किला पहुंचने के लिए हमें 20 मिनट का समय लगा।वहाँ पर लोगों की भीड़ जमी थी, लाल किला के बाहर बहुत से लोग अपने दुकान लिए बैठे थे। हम लालकिला के भीतर तो प्रवेश नहीं कर पाए परन्तु बाहर से ही उसका दृश्य देखा। वहाँ जाकर हमें लालकिला के इतिहास के बारे में पता लगा सम्राट शाहजहाँ ने 12 मई 1639 को लाल किले का निर्माण शुरू कराया, जब उन्होंने अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित करने का निर्णय लिया । मूल रूप से लाल और सफेद, इसके डिजाइन का श्रेय वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी को दिया जाता है, जिन्होंने ताज महल का भी निर्माण किया था । किला शाहजहाँ के अधीन मुगल वास्तुकला के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है और भारतीय परंपराओं के साथ फारसी महल वास्तुकला को जोड़ता है।

15 अगस्त 1947 को भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लाहौरी गेट के ऊपर भारतीय ध्वज फहराया । हर साल भारत के स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) पर, प्रधान मंत्री किले के मुख्य द्वार पर भारतीय तिरंगा झंडा फहराते हैं और भारतीय सेना कोर ऑफ़ सिग्नल्स की सार्वजनिक संबोधन प्रणाली के माध्यम से इसकी प्राचीर से राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित भाषण देते हैं । विश्व धरोहर सम्मेलन में लाल किले को "मुग़ल रचनात्मकता के चरम" का प्रतिनिधित्व करने वाला बताया गया है। किला स्थानीय परंपराओं के साथ इस्लामी महल संरचना का संश्लेषण करता है, जिसके परिणामस्वरूप " फ़ारसी , तिमुरिड और हिंदू वास्तुकला " का संगम होता है। किला भारतीय उपमहाद्वीप में बाद की इमारतों और उद्यानों के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता था। बारिश में वहाँ का वातावरण बहुत शीतल था, हम सभी वहाँ पर कुछ देर रुके और फिर सरोजिनी मार्केट के लिए रवाना हुए।

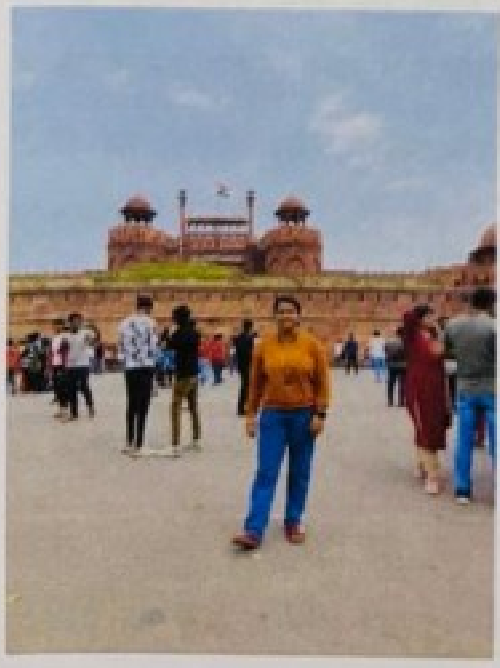

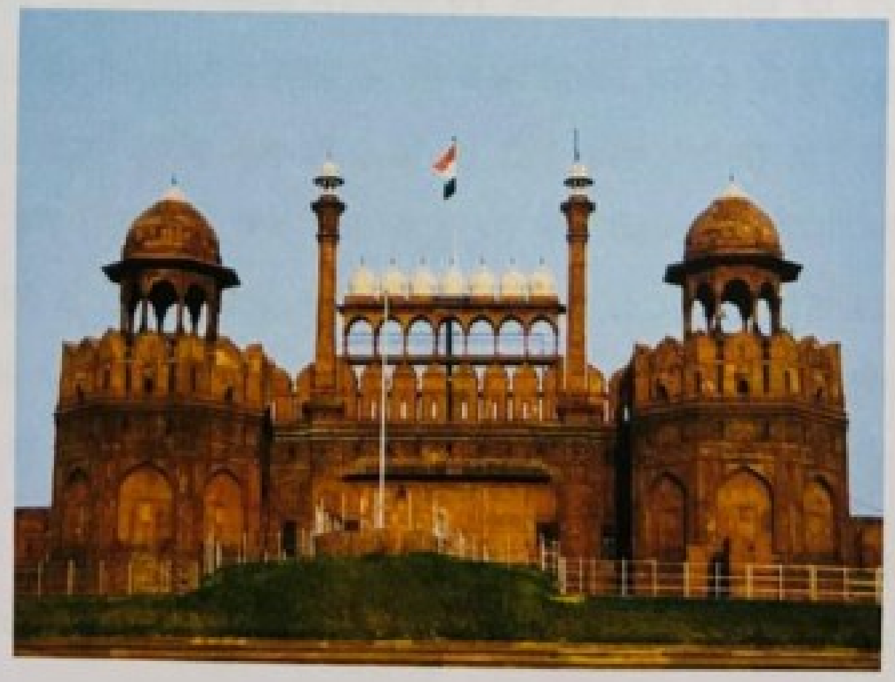

लाल किला से होकर हम सरोजिनी मार्केट जाने के लिए तैयार हुए बरिश के कारण दिल्ली का पूरा रास्ता एकदम पानी पानी सा हो गया था पक्का सड़क न होने के कारण सरोजिनी मार्केट के सामने  वाला जगह पूरा कच्चा हो गया था। बट हम सभी बहुत ही ज्यादा उत्साह में थे क्योंकि सरोजिनी मार्केट में चीजें सस्ती मिलती है। सरोजनी मार्केट पहुंचने से पूर्व ही कुछ लोग पहले से ही सस्ते दाम में सामान बेचने लगे एक व्यक्ति मिला जिसने कहा कि आईफोन के एयरपोर्ट्स सिर्फ 1000 में,शुरुआत ही इतनी सस्ती चीजों से हुई तो आगे जाकर कितनी सस्ती दामों में हमें मिलेगा यह सोचकर सभी बच्चो ने बड़े खुशी के साथ मार्केट की तरफ बढ़े, बस मार्केट की शुरुआत में ही कपड़ों की ढेर लगी थी सारे अच्छे अच्छे कपड़े थे, सिर्फ कपड़े ही नहीं लड़कियों के गहनों तथा चप्पलों, और मेकअप के भी कई सामान वहाँ पर मौजूद थे,ज्यादा सस्ता तो नहीं था परंतु शोरूम के मुकाबले यहाँ पर चीजें अत्यधिक सस्ते में मिलती है।

हम करीबन वहाँ पे 3 घंटे तक चीजें खरीदे और फिर जब हम थक गए तो हम वापस से वही जगह पर लौटे जहाँ से हमने मार्केट घूमने की शुरूआत की, कढ़ कुछ बच्चों ने तो इतने सारे सामान खरीद लिए थे कि उनका लगेज तीन गुना बढ़ गया था। सस्ते सामान ऊपर से हाई ब्रैंड के कम ही मिलते हैं कारणवश सभी ने धूम शॉपिंग की। शॉपिंग करने के बाद हम बस के लिए रुके, बस 8:30 बजे वहाँ पर पहुंचा, सभी लोग जल्दी से बस में चढ़ गए क्योंकि हम बहुत ज्यादा थक गए थे करीबन 1 घंटे के बाद हम होटल पहुंचे आज होटल में हमारी आखिरी दिन था इसलिए सारे सामान याद करके हमें पुनः अपने बैग में डालना था।

हमने एक एक करके अपनी पूरी सामान याद सहित साथ में डाला, और फिर होटल से कुछ मंगवाकर हम सभी ने एक साथ खाना खाया। हम यह सोच कर दुखी थे कि यह दिन कितने जल्दी बीत गए अभी तो आये थे और अभी हमें जाना पड़ रहा है। मन नहीं कर रहा था वहाँ से आने का, परंतु क्या करे आना तो था। हमारी ट्रेन सुबह 5:00 बजे की थी हम सभी से कहा गया था 2:00 बजे उठकर तैयार हो जाना ताकि ट्रेन में जाने के लिए हमें लेट ना हो। यह सोचकर हम सभी जल्दी जल्दी सोने की तैयारी में लग गए परंतु उस रात ज्यादातर किसी को नींद ही नहीं पड़ी कारणवश सुबह उठने में देरी हो गई, कुछ बच्चे सुबह के 3:00 बजे उठे और हमारे शिक्षक बहुत ही ज्यादा परेशान थे कि कहीं हमें ट्रेन छूट न जाए, हम सभी को शिक्षक से बहुत डांट पड़ी पर फिर भगवान का शुक्र है कि हम समय पर ट्रेन तक पहुँच गए।

ट्रेन स्टेशन पर खड़ी थी हम जल्दी से ट्रेन पर चढ़े और अपनी अपनी सीट धुलने लगे एक लड़की का बैग चेकिंग पर ही छूट गया था वह बहुत परेशान थी लेकिन वापस जाने पर उसको

उसकी बैग मिल गई। सभी को अपने सीट मिल गए और सभी सोने लगे सुबह उठ कर हम यह सोचते रहे कि अभी बस और 1 दिन फिर हम घर पहुँच जाएंगे मन में खुशी भी थी तथा हम उदास भी थे। ट्रेन में हमने होली मनाई, हमारे मित्र होली के पैकेट 2 दिन पहले ही छुपाकर लाए थे, ट्रेन में सारे लोग हमे देख रहे थे और हमें किसी की फर्क भी नहीं पड़ी हम अपने में ही होली खेलने लगे। पहली बार ऐसी होली मनायी कि जिंदगी भर याद रहेंगी। हमने दिन का खाना ऑर्डर किया था, इस बार हम सभी को पसंदीदा सीट मिला, बस सभी बच्चे मिल जुलकर अपने हिस्से की चीजें सभी सभी को दिए। वह रात हम अच्छे से सोए और हम उत्सुक थे कि दूसरे ही दिन हम जल्दी से जल्दी घर पहुँच जाएंगे। सुबह 10:30 बजे तक हम मडगांव स्टेशन पहुँच गए। समय से पूर्व ही हमारे परिवार वाले वहाँ हमें लेने के लिए तैयार खड़े थे। 23 सभी ने अपने परिवारवालों से गले लगाया और खुशी खुशी घर गए।

निष्कर्ष

दिल्ली स्वतंत्र भारत की राजधानी है। इसके प्रतेक भाग में इतिहास के सभी युगों की गाथाएं सिमटी हुई है। इसमें कहि महाभारत के विरो की स्मृति सोई हुई है। तो कही दिल्ली के नरेश पृथ्वीराज चौहान के सत्रह युधो की वीरता की गाथा। कहीं पर मुगल सम्राट शाहजहाँ की वास्तुकला बिखरी पड़ी है। तो कहीं अंग्रेजों द्वारा निर्मित ऊँची-ऊँची भव्य इमारते सिर ऊँचा किये खड़ी हैं। इनके अतिरिक्त आधुनिक दर्शनीय स्थलों ने तो इसकी सुंदरता को और भी चार चाँद लगा दिए है। इन सब दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए देश-विदेश से अनेक लोग आते रहते है।

इस ऐतिहासिक नगरी दिल्ली को देखने व समझने के लिए कम-से-कम एक सप्ताह का समय तो चाहिए। यह दिल्ली दो भागों में विभाजित हैं। दिल्ली व नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली के प्रमुख दर्शनीय स्थल है। लाल किला, रेलवे का बड़ा जंक्शन, जामा मस्जिद, गुरुद्वारा सीस गंज, चांदनी चौक का भव्य बाजार, पुराना किला आदि। इनमें लाल किला पत्थर से बना हुआ विशाल किला है जिसे मुगल सम्राट शाहजहाँ ने बनवाया था। यह बहुत बड़ी जगह में फैला हुआ है। जामा मस्जिद मुसलमानो का पूजा-स्थल है। जहाँ मुसलमान लोग नमाज़ अदा करते है। लाल किला से थोड़ी दूर फव्वारे के ठीक सामने गुरुद्वारा सीसगंज है। जहां गुरु तेन बहादुर ने अपनी बलि दी थी। यह सीखो का पवित्र स्थान है। लाल किले के ठीक सामने चाँदनी चौक का भव्य बाजार है, जो व्यापार का केंद्र भी है। इन सबके पास एक बड़ा रेल्वे स्टेशन है। जहां हमेशा चहल-पहल रहती है।

नई दिल्ली के प्रमुख दर्शनीय स्थल इस प्रकार है। कुतुबमीनार, राजघाट, शांतिवन, विजयघाट, चिड़ियाघर, संसद भवन, बिड़ला मंदिर, राष्ट्रपति भवन, शक्तिस्थल, मुगल गार्डन, जंतर-मंतर, कनॉट प्लेस, छतरपुर स्थित देवी का मंदिर, अक्षरधाम मंदिर, लोटस टेम्पल, नेहरू तारामंडल आदि। इनमे राजघाट महात्मा गाँधी जी की, शांतिवन श्री नेहरू जी की, विजय घाट लाल बहादुर शास्त्री जी की व शक्तिस्थल श्रीमती इंदिरा गांधी जी की समाधिया है। चिड़ियाघर में अनेकों पशु-पक्षी है। जिन्हें बच्चें बहुत चाव से देखते है। संसद भवन में देश के कानून बनाये जाते हैं। राष्ट्रपति भवन में देश के राष्ट्रपति रहते है। बिड़ला मंदिर व छतरपुर मंदिर हिन्दुओ के पूजा स्थल है। कुतुबमीनार एक ऐतिहासिक स्थल है। जिसके पास एक लौह स्तंभ है। जो अपने आप मे कला के एक अदभुत नमूना है। इसे चन्द्रगुप्त द्वितीय ने बनवाया था। इंडिया गेट पर प्रज्वलित रहने वाली जय जवान ज्योति स्वतंत्रता संघर्ष का स्मरण करा देती है। यमुना नदी

की चर्चा और दर्शन किये बिना दिल्ली दर्शन को सम्पुर्ण माना ही नही जा सकता। इस प्रकार नए- पुराने मिलकर आज दिल्ली का प्रतेक भाग दर्शनीय कहा जा सकता है।

**अक्षरधामः -** अक्षरधाम मंदिर नई दिल्ली में 10,000 वर्ष पुराना जिसका पूरा नाम स्वामीनारायण अक्षरधाम सेतु है। जिसकी विस्मयकारी सुंदरता देखते ही बनती है। जिसे बहुत ही बुधिमतापूर्ण बनाया गया है अक्षरधाम की बनावट उसकी शिल्पकला, परंपराओ ओर आध्यात्मिक संदेशों के तत्वों को शानदार तरीको से दिखता है। अक्षरधाम ज्ञानवर्धक यात्रा का एक ऐसा अनुभव है। जो प्रगति को दर्शाता है। अक्षरधाम मैं अक्षरधाम परिसर का निर्माण स्वामीनारायण जी द्वारा किया गया है। जिसका नाम श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीए., पी.एस) के आशीर्वाद से 11,000 कारीगरों ओर हजारों स्वयंसेवक के विराट प्रयास से पाँच वर्षो में पूरा हुआ इसका नाम गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड में विशव के सबसे बड़े विस्तृत हिन्दू मंदिर परिसर के रूप में हुआ इसका उदघाटन 6 नवम्बर 2005 को हुआ था।

**इंडिया गेटः-** नई दिल्ली के मध्य चौराहे में 42 मीटर ऊँचा इंडिया गेट है। जो मेहराबदार" आर्क द ट्रायम्फ" के रूप में है। फ्रेंच का उन्टरपार्ट के अनुसार यहाँ 70,000 भारतीय सैनिकों का स्मारक है। जिन्होंने विशव युद्ध प्रथम के दौरान बिट्रिश आर्मी के लिए अपनी जान गवाई थी। इस स्मारक में अफगान युद्ध 1919 के दौरान पशिममोत्तर सीमांत (अब उत्तर पशिचम पाकिस्तान) में मारे गए 13516 से अधिक बिट्रिश ओर भारतीय सैनिकों के नाम अंकित है। इंडियागेट की आधारशिला 1921 में ड्यूक ऑफ कनॉट ने रखी थी। इसका डिजाइन ऐडविन ल्यूटीन ने डिजाइन किया था इसे 10 साल बाद वायसराय लार्ड इरविन ने राष्ट्र को समर्पित किया था।

**राष्ट्रपति भवनः -** राष्ट्रपति भवन का निर्माण कार्य 1912 मे बनना शुरू हुआ था। और 1929 में इसे बिट्रिश सरकार को सोपा गया था। इस तरह से ये इमारत 17 साल में बनकर तैयार हुई थी। खास बात ये है। कि इसको बनाने में 29 हज़ार मजदूर लगे थे। वे इटली के क्यूरनल पैलेस के बाद भारत का राष्ट्रपति भवन का दूसरा सबसे बड़ा निवास स्थान है। देश के अलग-अलग हिस्सों के लोगो के राष्ट्रपति के रूप में इस भवन में रहने का मौका मिल चुका है।

**लोटस टेम्पल (कमल मंदिर):-** भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित लोट्स टेम्पल अपनी अदभुत वास्तुकला और आदित्य शिल्पकारी के लिए यहां के प्रमुख आकर्षण केंद्रों में से एक है। इसे भारतीय उपमहाद्वीप के मदर टेम्पल भी कहा जाता है। यह भारत के पर्यटन स्टालों में से एक है। और इसकी खूबसूरती को देखने के लिए लोग दुनिया के कोने - कोने से आते है। कमल के फूल के आकार में बना यह लोट्स टेम्पल अपनी खूबसूरती के लिए बहुत सारे आर्किटेकचरल अवार्ड से भी नवाजा गया है।

**कुतुबमीनारः-** कुतुबमीनार का निर्माण दिल्ली के पहले मुस्लिम बादशाह कुतुबद्दीन ऐबक ने 1199 ईसवी में शुरू कराया था। ऐबक ने कुतुबमीनार के ग्राउंड ओर पहले फ्लोर का ही निर्माण कराया था। बाद में उनके दमाद ओर उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने इसमें तीन ओर मंजिल बनबाई कुतुबमीनार ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। यह दिल्ली के महरौली इलाके में स्थित है।

यूनेस्को ने इसे "वर्ल्ड हेरिटेज साइट" का दर्जा दिया है। लाल और पीले बलुआ पत्थरो से बना हुआ ये मीनार दुनिया की सबसे ऊंची मीनारों में से एक है। इसकी ऊँचाई 72.5 मीटर (237.86 फिट) है। इसमें कुल 379 सीढ़िया है।

इस प्रकार दिल्ली ऐतिहासिक स्थलों का जमघट है। जिसमे तरह-तरह के ऐतिहासिक स्थल और मंदिर इत्यादि है। जो अपनी वस्तुकला और बनाबट के कारण विशव विख्यात है। इनमे से जंतर-मंतर, लाल किला, और भी ऐसी जगह है। जिसकी सुंदरता वे बनावट के बारे में इन अक्षरों का प्रयोग करके हम अनुभव नही कर सकते इसके बारे में जानना या इसको देखना हो तो केवल फोटो इत्यादि से कुछ नही होगा। इसे तो दिल्ली में जाकर जो दिल्ली के बहार रहते है। वो इसका आनन्द अपनी स्वयं की आखों से साक्षात दर्शन करके ही ले सकते है। और अनुभव ले सकते है। कि हमारा भारत देश अपनी संस्कृति के साथ ही अपने देश की सुंदरता के लिए भी विशव विख्यात है।